MAITHILI

# भवप्रीतानन्द पदावली

( झूमर–संगीत )



रचयिता

सदुपाध्याय

## श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा

( वैद्यनाथ मन्दिर के मठाधीश )






मूल्य रु० १·२५ पैसे

सर्वाधिकारी:—
श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा

प्रथम संस्कर
५००० प्रतियाँ
१६ सितम्बर १९६८




मुद्रक—
दि क्ुईक प्रेस,
वैद्यनाथ देवघर (बिहार)



भूमिका

# सदुपाध्याय श्रीश्री भवप्रीतानन्द ओझा

## व्यक्तित्व एवं कृतित्व

गंगा के सदृश मानव-जीवन भी परिस्थिति के विशाल खण्डों से अनवरत टकराता, गिरता और उठता चलता है और अंत में विराट जीवन-पुंज में समाहित हो जाता है। परिस्थिति-जनित संघर्ष से जीवन में जो रूप-परिवर्त्तन होते हैं, वे ही व्यक्ति विशेष के 'व्यक्तित्व' को संवारते और निखारते हैं, वेही पुंजीभूत होकर 'प्रतिमा' का निर्माण करते हैं जो सुहावनी भी हो सकती है और भयावनी भी। सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द जी ने आज अपने ८२ वर्ष के जीवन में जिस 'व्यक्तित्व' एवं 'प्रतिमा' का निर्माण किया है वह सर्वथा आकर्षक है, तभी तो जीवन-पथ के राहगीरों की दृष्टि इस पर बरबस पड़ती रही है और शतियों तक पड़ती रहेगी। वास्तव में उनका जीवन एक ऐसा संगम-स्थल है जहां प्रतिभा, भक्ति और कर्मठता की दिव्य त्रिवेणी का उदय होता है जिसके अजस्त्र पावन प्रवाह में न जाने कितने अवगाहन करके पुण्य' प्राप्त कर चुके हैं और प्राप्त करते रहेंगे।

समन्वय, सरलता, सहृदयता, सौम्यता एवं काव्य-प्रतिभा के प्रतिमूर्त्ति सदुपाध्याय जी युग युग तक मानव-समाज के लिए प्रेरणा के स्त्रोत, आदर्श-स्थंभ तथा अध्ययन-मनन के विषय

बने रहेंगे। स्वयं शैक्षिक उपाधियों से वंचित रहते हुए भी आज वे बड़े-बड़े एम० ए०, डी० लिट० के अध्ययन के विषय हो रहे हैं, गुफा कन्दराओं में न जाकर भी आज वे भक्त-शिरोमणि माने जाते हैं, राजा-महाराजा न होते हुए भी आज वे राज-योग के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। अपने ८२ वर्ष के इस दिव्य जीवन का निर्माण इन्होंने स्वयं किया है। इसके क्रमिक विकास में उनकी स्वभावगत दृढ़ता, विनम्रता, कर्त्तव्यपरायणता, सहृदयता आदि गुणों का विशेष योग रहा है। भगवत्कृपा तो इस महान् भक्त कवि को उपलब्ध है ही।

## प्रादुर्भाव एवं शैशव

गौर वर्ण, मझौला कद, छोटे-छोटे सुफेद बाल, त्रिपुण्ड-मंडित विशाल ललाट, मस्तक, ग्रीवा, भुजा आदि में रुद्राक्ष तथा रत्नों की मालाएं यंत्र एवं तावीज, स्वच्छ परिधान, पावों में खराऊँ, समस्त मुखमण्डल पर सात्विक भाव एवं तेज, मृदु एवं स्वल्प भाषण, प्रभावोत्पादक प्राचीन ऋषि-सुलभ व्यक्तित्व, सदुपाध्याय भवप्रीतानन्दजी का जन्म वैद्यनाथधाम के निकट कुण्डा ग्राम में सरदार पण्डा के घर आश्विन कृष्ण नवमी बुधवार को संवत् १९४३ अर्थात् सन् १८८६ में हुआ। तत्कालीन सरदार पण्डा शैलजानन्द जी ने ज्येष्ठ पौत्र के जन्म के अवसर पर काफी खुशियां मनाईं-अन्न-वस्त्र, धन-द्रव्य दान दिए। कहा जाता है कि जन्म के दिन ही सादुपाध्याय जी की जिह्वा पर "वाणी बीज मंत्र" अंकित कर दिया गया। हो



सकता है, उसी के परिणाम स्वरूप आज उनकी वाणी इस अंचल के शत-शत कंठों से मुखरित हो रही है। इनके पिता का नाम त्रिपुरानन्द एवं माता का नाम नूना मैया था।

प्राचुर्य के बीच प्रारंभ जीवन के उपयुक्त सदुपाध्याय जी की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की गई। उनके दादा शैलजानन्द जी एवं दादी सुमित्रा देवी का समस्त ध्यान इस होनहार बच्चे के शरीर एवं मन के समुचित विकास की दिशा में केन्द्रित रहने लगा। योग्य शिक्षक-अध्यापक रखे गए। अभी बालक भवप्रीता तीसरे वर्ग में प्रविष्ट ही हुआ था कि स्कूली शिक्षा को पारिवारिक अन्तर्विरोध एवं वैमनस्य के कारण सदा के लिए बन्द कर देना पड़ा।

छठी की रात के बाद से ही सदुपाध्याय जी का लालन-पालन का समस्त दायित्व उनकी पितामही ने अपने ऊपर ले लिया था। बचपन से ही सदुपाध्याय जी अपनी दादी से देवी-देवताओं की पौराणिक कथाएँ, धार्मिक पर्व-त्यौहारों के महत्व आदि के संबन्ध में किस्सा-कहानी सुनते रहे जो आगे चलकर इस महान् व्यक्तित्व के लिए नींव के पत्थर सिद्ध हुए

पारिवारिक अंतर्विरोध एवं वैमनस्य का क्रम इस गति से चलता रहा कि अभी किशोरावस्था समाप्त भी नहीं हो पाई थी और भवप्रीतानन्द जीवन के गहनतम अन्धकार के सम्मुख किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर कालचक्र की प्रतीक्षा में असहाय आ खड़े हुए। पिता तो बचपन में ही चल बसे थे। दुलार-प्यार की एकमात्र स्रोत उनकी पितामही श्रीमती सुमित्रा देवी जी भी

इन्हें असहायावस्था में छोड़ कर चल बसीं। कहते हैं, 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'। इनकी दादी को अटूट विश्वास था कि बालक भवप्रीतानन्द एक दिन सरदार पण्डा की गद्दी पर अवश्य बैठेगा और दुनिया में नाम करेगा। इसी विश्वास के चलते सुमित्रा जी ने मरते समय उन्हें स्पष्ट शब्दों में वारण किया, 'मेरे मरने पर तुम मुखाग्नि नहीं करना जानते नहो', तुम्हें सरदार पण्डा बनना है, दुनिया में नाम करना है और इस गद्दी के अधिकारी को किसी की मुखाग्नि नहीं करनी चाहिए।" इनके पितामह शैलजानन्द जी यद्यपि जीवित थे किन्तु सरदार पण्डा की गद्दी से हट गये थे और अपने ज्येष्ठ पौत्र की विपिन्नावस्था के दर्शक मात्र बने रहे।

## रामपुर ग्राम वास

सोना आग में तपकर चमकता है और मनुष्य गतिरोध की भट्ठी में। युवक भवप्रीता ने जीवन के गतिरोध का सामना बड़ी ही दृढ़ता, बुद्धिमत्ता आत्म-विश्वास, मर्यादा एवं कर्मठता के साथ करना शुरू किया। दैन्य, नैराश्य एवं दौर्बल्य का कहीं नाम नहीं। जीविका के समुचित साधन के अभाव में देवघर में रहना असंभव हो गया। यजमानिका वे कर नहीं सकते थे। मर्यादा के प्रतिकूल होता। शैक्षिक योग्यता भी नहीं थी कि कहीं नौकरी करते। ऐसी स्थिति में अपनी एकमात्र सम्पत्ति एक मकान को दो हजार रुपये में बेचकर निकट के रामपुर ग्राम में मिट्टी-फूस का घर बनाकर आप ग्वालों के बीच रहने लगे।



कहा गया है, 'जहां राज कर चुके हों, वहां रंक बनकर रहना उचित नहीं'।" सदुपाध्याय जी के इस निर्णय में कितना आत्म-विश्वास छिपा हुआ है, सोचा जा सकता है। कुल २० वर्ष की वयस में ही वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती नन्द दुलारी देवी के साथ रामपुर जाकर रहने लगे। ग्रामवास में जो भी त्रुटियां हों, नगर के दूषित वातावरण, शोर-गुल आदि से दूर भारत के गांव ईश्वर-चिंतन एवं आत्म-प्रसारण, के लिये आज भी स्वस्थ तथा शान्त वातावरण प्रस्तुत करते हैं। भगवत्-भजन, अध्ययन, चिन्तन, मनन, ग्राम-वासियों के सुख-दुःख में हाथ बंटाने आदि में ही सदुपाध्याय जी का समय बीतता रहा। जीवन विकास के आवश्यक तत्वों के संबंध में कवि रवीन्द्र ने लिखा है, "पढ़ो कम सोचो अधिक, बोलो कम सुनो अधिक।" रामपुर वास से सदुपाध्यय जी में ये तत्व अनायास ही आ गए। किन्तु ग्राम हो या नगर आज के युग में अर्थ का सर्वत्र समान आधिपत्य है। आखिर २००० घटते-घटते २० रुपए की छोटी राशि पर उतर आए और सदुपाध्याय जी की अर्थ विषयक चिन्ता बढ़ती बढ़ती अंधकार पूर्ण भविष्य के रूप में चारों ओर फैल गई। आगे कैसे चलेगा? यही चिन्ता उनके कोमल हृदय को सब समय आच्छादित किए रहती थी। ऐसी स्थिति में उनकी धर्मपत्नी ने एक रात को सपना सुना कि मां दुर्गा स्वयं प्रकट होकर कह रही हैं, "तुम्हारे पास जो बीस रुपये बच रहे हैं, वह मुझे दे दो। इसीसे तेरा कल्याण होगा।" सदुपाध्याय जी को जब सपने की जानकारी हुई तो उन्होंने मां दुर्गा की पूजा-

अर्चना में बीसों रुपये खर्च कर दिए। भय किसका ? धैर्य और भगवत्कृपा का अवलंबन लिए वे सर्वहारा होकर भी अपने को महान् समझते रहे। जीवट और आत्माभिमान का उदाहरण इससे अच्छा बिरले मिले।

## कवि भवप्रीतानन्द

यों तो किशोरावस्था से ही भवप्रीतानन्द की ईश्वर प्रदत्त काव्य-प्रतिभा छोटे छोटे भक्तिपरक गीतों के रूप में यदा-कदा अभिव्यक्ति पाती रहीं, किन्तु रामपुर के एकान्त जीवन में इन्हें झूमर, धैरा, पाला आदि गेय पदों की रचना करने का विशेष अवसर मिला। इसके प्रयोजन एवं उपादेयता के विषय में कवि ने स्वयं अपनी "वृहत् झूमर रस मञ्जरी" ( चतुर्थ संस्करण सन् १३४० साल ) की भूमिका में लिखा है, 'संताल परगने में झूमर सर्वाधिक प्रचलित है। यहां के आदिवासियों की धारणा है कि नन्द-नन्दन श्री मधुसूदन गोकुल नगर में रहते समय राधा के प्रेम में विभोर होकर नील-सलिला उर्म्मिमाला मण्डिता यमुना के चारु श्यामल तट पर बंशी-ध्वनि के साथ राधा की प्रणय-गीति को झूमर छन्द में व्यक्त करते थे। अभी भी यहां के घाटवालों (जमीन्दारों) यहां कात्तिक पूर्णिमा के दिन काफी पैसे खर्च करके "रासोत्सव" मनाया जाता है। किन्तु बड़े ही दुःख का विषय है, इस ओर आजतक किसी को दिलचस्पी लेते नहीं देखा। इसीसे अपनी अयोग्यता को जानते हुए भी मैंने इस अभाव को दूर करने का प्रयास किया है और



मेरी आशा है कि सहृदय पाठक ( स्रोता ) मेरी त्रुटियों या अपूर्णताओं को सहानुभूति की दृष्टि से देखकर मुझे कृतार्थ करेंगे। घाटवालों यहां आयोजित "रासोत्सव" के अवसर पर हजार-हजार की संख्या में एकत्र होकर इस अंचल की जनता झूमर, धैरा, पाला आदि के गतिपूर्ण गायनों का रसास्वादन करती थी। किन्तु सदुपाध्याय जी की रचनाओं के पूर्व बंगला के पुराने झूमर, धैरा आदि से वह ऊब उठी थी और नवीनता चाहती थी। उल्लेखनीय है कि आज से साठ-सत्तर वर्ष पूर्व इस अंचल के संभ्रान्त परिवार में बँगला का काफी प्रचार था और स्कूलों में शिक्षा का माध्यम भी बंगला ही था। सदुपाध्याय जी बंगला के सशक्त जानकार एवं कवि के रूप में आगे आये।

सदुपाध्याय जी बंगला के महान् कवि माइकल मधुसूदन को अपना आदर्श-कवि मानते हैं और उनकी अमर कृति "मेघनाद वध" को सर्वाधिक प्रिय काव्य-ग्रन्थ। बंगला के कवि भरतचन्द्र तथा उनकी कृति "विद्या सुन्दर" भी इन्हें बहुत पसन्द हैं। किन्तु इस जन-कवि को समझने में देर न लगी कि बंगला की रचनाएँ इस अंचल के संभ्रांत परिवार एवं पढ़े-लिखे लोगों को छोड़ साधारण जनता को बहुत कम आनन्द दे पाती हैं। अतएव वे स्थानीय भाषा में भी झूमर, धैरा, पाला आदि की रचना करने लगे जो बहुत ही लोकप्रिय सिद्ध हुईं। उल्लेखनीय है कि सदुपाध्याय जी के पूर्व लोक-भाषा में इस प्रकार की रचनाएं नहीं के बराबर थीं और इन्हें ही स्थानीय लोक-भाषा में सर्व प्रथम इस प्रकार की रचनाएं करने का श्रेय

है जो अपने आप में एक साहित्यिक "स्कूल" कहा जा सकता है।

२० रुपए की अंतिम निधि को मां दुर्गा के चरणों में अर्पित करके सदुपाध्याय जी 'सर्वहारा' तो बन गए, किन्तु जीवन की यथार्थ आवश्यकताओं को कैसे भुला सकते थे; उसमें भी जब गार्हस्थ जीवन अंगीकार कर चुके थे। वाणी के रूप में भगवत्कृपा इस भक्त कवि की विपन्नता को दूर करने के लिए प्रकट हुई। निकट के लक्ष्मीपुर इस्टेट के राजा स्वर्गीय प्रताप नारायण देव जी उनकी रचनाओं से अत्यधिक प्रसन्न एवं प्रभावित हुए। सदुपाध्याय जी ने "वृहत् झूमर रस-मञ्जरी" में कृतज्ञता प्रकाश के रूप में स्वयं लिखा है, "लक्ष्मीपुर इस्टेट के स्वर्गीय ठाकुर प्रताप नारायण देव बहादुर ने मुझे फागा ग्राम में जा साढ़े सैंतीस बीघा जमीन ब्रह्मोत्तर के रूप में दी है, मैं बड़े ही सुख से उसका अधिकार-भोग कर रहा हूं और कृतज्ञतापूर्ण शब्दों में सदा आशीर्वाद देता हूं कि ठाकुर साहिब की दिवंगत आत्मा इन्द्र की भांति चिरकाल तक स्वर्ग में सुख-भोग करती रहे। ठाकुर साहिब की बड़ी रानी श्रीमती कुसुम कुमारी देवी जी भी मुझे स्नेह की दृष्टि से देखती रही हैं। अतः मैं आशीर्वाद देता हूँ कि रानी साहिबा दीर्घायु हों और चिरकाल तक राज्य-भोग करती रहें।"

फिर क्या था सदुपाध्याय जी की रचनाएँ इस अंचल के गांव-गांव में फैल गईं। संताल परगना, वीरभूम, मानभूम, (अब पुरुलिया एवं धनबाद), सिंहभूम, मानभूम, बांकुरा,



मिदनापुर आदि स्थानों में इस महान् लोक-कवि की चर्चा होने लगी। उनकी सरस रचनाओं से छोटे-बड़े सब आनन्द लेने लगे। बड़े-बड़े घाटवालों एवं राजा-महाराजाओं की दृष्टि इनकी ओर आकृष्ट हुई। काशीपुर पंचकोट के राजा ने इन्हें यथेष्ट सम्मान दिया। इनके रहने के लिए देवघर में एक मकान खरीद दिया। साथ ही सरदार पण्डा की गद्दी प्राप्त करने में भी सहायता की। जामताड़ा के राजा ने भी इनकी पर्याप्त प्रतिष्ठा की और धन दिया। २०वीं शती में सदुपाध्याय जी ही एक ऐसे लोक-प्रिय कवि हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के बल बड़े-बड़े राजा, जमीन्दारों को प्रभावित किया और प्रचुर धन-यश अर्जन किया तथा जिनकी रचनाएं बगैर किसी प्रचार-प्रसार के जन-जन के कंठ में जा बैठीं। आज देवघर, पुरुलिया, धनबाद आदि स्थानों में सदुपाध्याय जी की रचनाएं जन-जीवन के अभिन्न अंग बन गईं हैं—मादर और डंफ पर उनके पद जहां-तहां सुनाई पड़ते हैं।

## काव्य-रचना का माध्यम

"बंगाल जो आज सोचता है, भारत पचास वर्ष के बाद उसे सोच पाता है," यह कथन अन्यत्र जो भी हो किन्तु सदुपाध्याय जी की रचनाओं के साथ शत प्रति शत सही है। यद्यपि कवि की काव्य-रचना का माध्यम बंगला एवं मैथिली दोनों रही हैं, किन्तु आज से ४०-५० वर्ष पूर्व ही उनकी रचनाओं का संग्रह बंगला में प्रकाशित हुआ जिसके अनेक

संस्करण आज तक निकल चुके हैं। व्रजभाषामिश्रित हिन्दी में भी, इनकी कुछ रचनाएं हैं।

सदुपाध्याय जी ही प्रथम कवि हैं जिन्होंने मैथिली के स्थानीय रूप में सर्व-प्रथम रचनाएं की हैं जो उनकी बंगला-रचनाओं के समान ही लोकप्रिय, सरस तथा साहित्यिक हैं। सदुपाध्याय जी के हाथों मैथिली की स्थानीय बोली (देवघरिया) ने उच्चकोटि के काव्य-प्रणयन की क्षमता प्राप्त की है। मैथिली ऐसी प्राचीन साहित्यिक भाषा है जिसकी काव्यगत रीति का उल्लेख दसवीं शती में राजशेखर द्वारा प्रणीत "काव्य मीमांसा" में पाया जाता है। इस प्राचीन साहित्यिक भाषा का प्रभाव पूर्व भारत की असमिया, बंगला एवं उड़िया भाषाओं पर भी विद्वानों द्वारा स्वीकार किया जा चुका है। सदुपाध्याय जी की रचनाएं मैथिली रीति के अन्तर्गत आती हैं।

पिछले पांच सौ वर्षों से गंगा के उत्तर से मैथिली भाषा भाषी लोग गंगा के दक्षिण में आ आ कर बसते गए। देवघर के ब्राह्मणों (पण्डों) के पूर्वज भी इसी क्रम में यहां आये। उनके साथ मैथिली भी आई। काल एवं स्थान भिन्नता के प्रभाव के साथ आज वही यहां बोली जाती है। इसी पृष्ठि भूमि में सदुपाध्याय जी की बंगला-इतर रचनाओं का अध्ययन-मनन वांछनीय है।

काव्य-सर्जना में भाषा एवं उसकी रीति से अधिक



परम्परा तथा परिवेश का महत्व रहता है। इस दृष्टि से निश्चय ही सदुपाध्याय जी स्थानीय बोलियों, काव्य शैलियों तथा रीतियों की परम्परा से भी प्रभाव ग्रहण करते रहे हैं।

सदुपाध्याय जी भारद्वाज गौत्रीय बेलोंचे-गढ़ मूलक मैथिल ब्राह्मण हैं। यह बेलोंचे-गढ़ दरभंगे के सकरी रेलवे स्टेशन के निकट है जिसके पास ही किसी समय कर्णाट वंशीय मैथिल नरेशों की राजधानी थी। संभव है, कर्णाट-वंश के अंतिम राजा हरिसिंह देव के अन्तर्धान होने और ओइनवार वंशीय ब्राह्मण नरेशों के सत्तारूढ़ होने के बाद, सदुपाध्याय जी एवं अधिकांश मैथिल पण्डे के पूर्वज इधर आ बसे और तब से यहीं हैं।

## रचनाएँ एवं प्रकाशित ग्रन्थ

सदुपाध्याय जी ने अपने ८२ वर्ष के जीवन में मैथिली एवं बंगला में हजारों झूमर, चैता, पाला, स्तुति, वन्दना आदि लिखे हैं, जिनमें से आज तक मुश्किल से पचीस प्रतिशत ही प्रकाशित हो पाए होंगे। आज भी वे अप्रवाह रचनाएँ करते हैं। आप उनसे किसी भी उत्सव या समारोह के लिए रचना तैयार करके देने का अनुरोध करें, और मात्र पांच दस मिनट के पश्चात् आपको मन-पसन्द रचना मिल जाएगी। यथार्थ में वे आशु कवि हैं। सबसे बड़ी विशेषता तो उनकी रचना का स्तर है जो आज भी वही है जो ६० वर्ष पहिले था। यह चीज बिरले कवि में देखी जाती है।

सदुपाध्याय जी की रचनाओं के जो संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं उनमें (१) झूमर रस-मञ्जरी (२) झूमर रस-तरंगिणी, (३) बृहत् झूमर रस-मञ्जरी (४) झूमर पारिजात बंगला में हैं। इनके अतिरिक्त बंगला में एक और काव्येतर ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है जो 'वैद्यनाथ क्षेत्र सर्वस्व' के नाम से प्रसिद्ध है। उपर्युक्त बंगला ग्रन्थों में से अनेक के कई संस्करण हो चुके हैं। देवनागरी लिपि में आज तक केवल "घैरा रत्न मंजूषा" प्रकाशित हुआ है।

## लोक-कवि सरदार पण्डा

वाणी की एकनिष्ठ अराधना केवल कवि को आर्थिक कठिनाई से त्राण दिलाने की दिशा में नहीं सहायक हुई, अपितु सरदार पण्डा की गद्दी पर बैठने के उनके अधिकार को भी सबल बनाया। अपने प्रशंसकों की सहायता से उन्होंने भूतपूर्व सरदार पण्डा उमेशानन्द जी के कैलास वास के पश्चात् कोर्ट में अपना अधिकार रखा और कोर्ट ने उन्हें ही गद्दी का अधिकारी स्वीकार किया। उल्लेखनीय है कि चालीस वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने के पश्चात् ही कोई अधिकारी इस गद्दी पर बैठ सकता है। कोर्ट के निर्णयानुसार साढ़े इकतालीस वर्ष की उम्र में (१३३६ साल अर्थात् १९२९ ईस्वी के ज्येष्ठ मास में) सदुपाध्याय जी सरदार पण्डा हुए और आज ४० वर्ष से इस पद को सुशोभित कर रहे हैं।

देखा जाता है, सात्विक स्वभाव के प्रतिभा सम्पन्न



पुरुष जब कभी किसी दायित्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होता है तो उसके कार्य प्रकृतिरंजन सिद्ध होते हैं। सदुपाध्याय जी ने तारा-मन्दिर का निर्माण किया है, सूर्य भगवान की अपहृत मूर्ति के स्थान पर नयी मूर्ति की स्थापना की है, मन्दिर द्वार पर एक शिवाला तथा सुलतान गंज में गंगा तट पर दूसरे शिवाला का निर्माण कराया है, अपने वासस्थान में दुर्गामण्डप एवं कूप का निर्माण कराया है। देवघर के घड़ीदार परिवार सदा से शारदीय दुर्गा पूजा करता आ रहा है। इन्हें आर्थिक सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से सदुपाध्याय जी ने एक भव्य भवन निर्माण करा दिया है जिसके किराये से दुर्गा पूजा सोल्लास हुआ करती है। लोकप्रिय कवि सदुपाध्याय जी शिक्षण संस्थाओं को भी सहायता देते आ रहे हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के निमित्त इन्होंने स्थानीय सार्वजनिक हिन्दी पुस्तकालय को अच्छी पुस्तकों के साथ एक आलमारी दी है। अनेक वर्षों तक देवघर के रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ को वार्षिक ५००) रु० की सहायता करते रहे। इस प्रकार के और भी कितने कार्य हैं जो इस कवि सरदार पण्डा ने लोकहित के लिये किए हैं।

## भजन, झूमर, घैरा आदि का गायन

सदुपाध्याय जी के जितने भी पद, भजन, झूमर, घैरा, पाला गीत आदि हैं सबके सब गेय हैं और वाद्य यन्त्रों के साथ प्रायः सम्मिलित सुर में गाये जाते हैं। इनके पदों को

पेशेवर गायक एवं इनके प्रशंसक तथा अनुचर भी बड़े ही आकर्षक ढंग से गाते हैं।

इनके पद लोक जीवन में इस प्रकार घुल मिल गये हैं कि खेत खलिहान में काम करने वाले मजदूर मकान की छत की पिटाई करते हुए औरतों का झुण्ड, गंगाजल भर कर आते हुए तीर्थयात्रियों के दल सब भाव विभोर होकर इनके पद गाते रहते हैं।

इनके पदों को सुर लय के साथ गाने में जिन लोगों ने ख्याति प्राप्त की है इनमें स्व० शिरोमणि हाजरा, स्व० शम्भूनाथ झा खवाड़े, पुरुलिया के प्रसिद्ध झुमर गायक कीर्तिनाथ गोस्वामी, देवघर के स्व० शिरोमणि ठाकुर, श्री विश्वनाथ ठाकुर श्री देवेन्द्र झा, स्व० उपेन्द्र झा, श्री जयनारायण खवाड़े प्रभृति के नाम उल्लेखनीय हैं। स्व० शिरोमणि हाजरा के सम्बन्ध में सदुपाध्याय जी ने स्वयं लिखा है, "बड़ाम के श्रीयुत शिरोमणि हाजरा महाशय जिस भांति मेरे झुमरों का सरस कण्ठ से संम्पूर्ण भाव प्रकट करते हुए गान कर सकते हैं, अन्य किसी को मैंने इस प्रकार गान करते हुए नहीं देखा है।" गणेश कला मन्दिर, देवघर सदुपाध्याय जी के झुमर घेरा आदि कुशलता पूर्वक सुर लय के साथ उपस्थित करता है।

सदुपाध्याय जी के पद गाते समय भावुक गायकों की तल्लिनता देखकर हृदय पुलकित हो उठता है।



## भवप्रीतानन्द पदावली (झूमर संगीत)

सदुपाध्याय जी के असंख्य झुमर गीतों में चुन चुनकर कतिपय उत्कृष्ट गीतों को इस संग्रह में रखा गया है जिसकी भूमिका के रूप में ये पंक्तियां लिखी जा रही हैं। यह संग्रह अपने आप में एक ऐतिहासिक महत्व की चीज है, कारण इसके पूर्व कोई कवि के झुमर गीत देवनागरीलिपि में नहीं प्रकाशित हो सके थे। पिछले साठ वर्ष की अवधि में इन्होंने जो रचनायें की हैं, उनमें से अधिकांश गायकों तथा जन साधारण के कण्ठों में हैं। इस संग्रह में अधिकांश ऐसी ही रचनायें हैं।

पिछले कई महीनों से अथक परिश्रम करके सदुपाध्याय जी ने अनगिनत पदों में से अनेक पदोंको संग्रीहीत करके देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया है और आज इसका सोल्लास उद्घाटन किया जा रहा है।

भारत के प्राच्य प्रखण्ड के लोकगीत तथा जनमानस को समझने के लिये सदुपाध्यायजी के लिखे पदों का अध्ययन काफी उपादेय सिद्ध होगा। अतएव सदुपाध्याय जी की समस्त रचनाओं को एकत्र किया जाय, उनका विषयानुक्रम

भवप्रीतानन्द ग्रन्थावली के रूप में देवनागरीलिपि में विभिन्न खन्डों में उनका प्रकाशन किया जाय। आज के शुभ दिन जिस पदावली ( झुमर संगीत ) का उद्‌घाटन किया जा रहा है, वह तो 'संकेत' मात्र है।

सदुपाध्याय जी के हाथ झुमर, क्या भाव, क्या भाषा, क्या संगीत, सभी दृष्टियों से साहित्य संगीत के किस उच्चतम बिन्दु को छूने लगा है, इसके उदाहरण इस छोटे से संग्रह में विद्यमान हैं। 'शिव स्तुति, में जो पद लालित्य एवं भाव तीव्रता पाई जाती है, वह सराहनीय है। "शिव स्वरूप वर्णन" में शिवजी का मंगलमय रूप कितना सजीव एवं प्रभावोत्पादक है—'भांगे आंखि ढुल ढल, झुमर संख्या ६ (भदवारी) में कवि ने निर्गुण गान का प्रतिपादन जिस ढंग से किया है, वह कबीर प्रभृति निर्गुण पंथी कवियों का स्मरण दिलाता है। तुलसी की भांति सदुपाध्याय जी सगुन निर्गुण को अभेद्य मानते हैं। राधा कृष्ण की, संयोग और वियोग दोनों स्थिति में, प्रेम लीलाओं का बड़ा ही मनोग्राही वर्णन पाया जाता है। संयोग का वर्णन देखिये, झुमर संख्या २२, 'गेलौं गगरीया ले जमुना किनरिया। वियोग के वर्णन में तो सदुपाध्याय जी कृष्णभक्ति शाखा के कवियों में अग्रगण्य है, देखें, झुमर संख्या ५२, सदुपाध्याय जी ने राष्ट्रीय भावों को लेकर भी कुछ अच्छे झुमर



गीत रचे हैं जो उनकी राष्ट्रीय भावना के परिचायक हैं। "तोरा में विदेशी रवि अस्त है १५ अगस्त।" चीनके पिछले आक्रमण के संबंध में भी इन्होंने झूमर रचे जो उच्चकोटि के राष्ट्रीय गीत हैं। हास्य विनोद को लेकर भी सदुपाध्याय जी ने झूमर लिखे हैं। "लफन्दर महात्म्य" तथा 'आलू चाप' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रस्तुत पदावली में बानगी के बतौर ही इनके थोड़े से झूमर-गीत सजाये गए हैं। देवनागरी लिपि में छपने के कारण यह संग्रह अवश्य ही अत्यधिक लोक प्रिय सिद्ध होगा।

## साहित्यिक मूल्यांकन

लोक जीवन को छूने और आलोड़ित करनेवाला काव्य ही समय की कसौटी पर खरा उतरता है। इस दृष्टि से सदुपाध्याय जी की रचनाएं पूर्ण सफल रही हैं। अपनी प्रतिभा के बल इन्होंने लोक भाषा को जो साहित्यिक सौष्ठव प्रदान किया है, वह तुलसी की प्रतिभा की याद दिलाता है। एक ओर जहां बड़े बड़े विद्वान् इनकी रचनाओं का अर्थ करने में दुरूहता का बोध करते हैं, वहीं दूसरी ओर जन-साधारण भी आसानी से इनका रसास्वादन कर लेते हैं।

रस और अलंकार की दृष्टि से भी सदुपाध्याय जी की रचनाएँ बेजोड़ हैं। उपमा के प्रयोग में आप अनुपमेय हैं। करुण रस का उदाहरण देखना हो तो उनकी रचनाओं को

सुर-लय के साथ गाते हुए व्यक्ति और सुनने वालों के मनोभाव को देखें। दोनों की आंखों से भाव-विभोरावस्था में झर-झर आंसू गिरते रहते हैं। इनकी रचनाओं की यह विशेषता इन्हें विद्यापति, चण्डीदास, मीरा प्रभृति कवियों की श्रेणी में ला रखती है।

प्रकृति-वर्णन तो इनकी रचनाओं में कूट-कूट भरा हुआ है जो अत्यधिक सजीव एवं प्राणवान है। जंगल, पहाड़, झरना, नदी, बादल, बिजली आदि के वर्णन इतने सरस एवं सुन्दर हैं कि इनका प्रत्यक्ष चित्र मानस-पट-पर उतर आता है। जंगल और जंगली जीव-जन्तु, पशु-पक्षी से सदुपाध्याय जी की विशेष रुचि है जो उनकी रचनाओं में भी परिलक्षित होती है और जीवन में भी। आज भी अपने घर में वे अनेकों जीव-जन्तु (हिरनादि) पशु-पक्षी पाले हुए हैं जो छोटा चिड़िया खाना के समान है। कुण्डा और रामपुर ग्राम के मनोहर प्राकृतिक वातावरण के चलते ही सदुपाध्याय जी में प्रकृति के प्रति ऐसा तादात्म्य पाया जाता है। आज भी कवि रामपुर के सुहावने वन-प्रांत, पहाड़ी नदियों, उषा एवं अरुणोदय, चांदनी रात, सन्नाटा भरी बरसाती काली रातें आदि का स्मरण करके भाव-विह्वल हो जाते हैं।

सदुपाध्याय जी की काव्य-प्रतिभा प्रधानतः गीत्यात्मक है जो नाट्य-तत्वों से परिपूर्ण है।

पौराणिक कथाओं पर आधारित इनके पाला गीत यद्यपि



प्रबंध काव्य की श्रेणी में रखे जा सकते हैं किन्तु इनमें भी गीति एवं नाट्य तत्व ही प्रधान हैं। सदुपाध्याय जी एक महान् भक्त कवि हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा एक विलक्षण धार्मिक समन्वय की स्थापना की है। इन्होंने शिव की स्तुति लिखी है, आद्या-शक्ति की स्तुति लिखी है, राम-कृष्ण, गणपति आदि देवताओं के ऊपर रचनाएं की हैं। जहां प्रायः भक्त कवियों की रचनाएं सम्प्रदाय विशेष तक सीमित पाई जाती हैं, सदुपाध्याय जी की रचनाएं सभी सम्प्रदायों के लोग समान रूप से पसन्द करते हैं। प्रत्यक्षतः वे शिव के आराधक हैं, विष्णु की विभिन्न लीलाओं के गायक और जगज्जननी मां दुर्गा के उपासक। इन्हें किसी एक सम्प्रदाय में सीमित करना संभव नहीं।

सदुपाध्याय जी की राधा-कृष्ण विषयक भक्ति की प्रगाढ़ता को स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं। इनकी रचनाएं इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। कवि अपने को राधा का पुत्र समझते हैं। ऐसा समझने का कारण भी है। अनेक वर्ष पूर्व कवि ने राधा-कृष्ण की जोड़ी को सपने में देखा। भगवान कृष्ण राधा से कह रहे थे, "इसे तुम अपना पुत्र समझो।" तबसे कवि अपने को राधा का पुत्र ही मानते हैं।

सदुपाध्याय जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के संबंध में संस्कृत बंगला, हिन्दी, मैथिली और अंग्रेजी के पत्र-पत्रिकाओं में पिछले २०/४० वर्ष से चर्चा हो रही है। एक बंगला पत्र में तो यहां

तक प्रकाशित किया गया कि बंगला लोक साहित्य के गौरव-रत्न भवप्रीतानन्द १६वीं शती के कवि थे जिनका जन्म बंगाल के वीरभूम जिले में हुआ था। ऐसा लिखने का जो भी कारण तथा अभिप्राय रहा हो किन्तु इससे इस महाकवि की महत्ता स्पष्ट सामने आती है, अन्यथा 'अपनाने' का ऐसा प्रयास क्यों?

बंगला साहित्य के मार्मिक विद्वान डा० सुकमार सेन ने सदुपाध्याय जी की रचनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

बिहार विश्वविद्यालय के मैथिली के रीडर प्रो० रमानाथ झा जी ने अपने अंग्रेजी निबंध में सदुपाध्याय जी को मैथिली के सर्वश्रेष्ठ लोक-कवि के रूप में स्वीकार किया है।

भागलपुर विश्वविद्यालय के डा० बेचन लिखते हैं, "इनकी रचनाएं मिथिला से बंगाल तक आज जन-मानस का अंग बनकर लोक-कंठ में समा गई है।"

बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान् डा० सुधीर कुमार करण एम०ए० अपनी "सीमान्त बंगला लोकयान" नामक पुस्तक में सदुपाध्याय जी की रचनाओं की चर्चा करते हुए लिखते हैं, "झूमर-जगत् के गुरू के रूप में इनकी मान्यता है। इनके पदों के भाव लोकायन हैं किन्तु भाषा शिक्षालब्ध। पदों के सुर भी मूलतः लोकायन एवं मादक-डंफा के ताल में ही सुनने में अधिक अच्छा लगता है।

देवघर के रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ द्वारा "संगीत संग्रह" नामसे जो बंगला ग्रन्थ प्रकाशित है; इसमें सदुपाध्याय जी के



कुछ उत्कृष्ट झूमर-गीत दिए गए हैं जो वहां के छात्र सुर के साथ गाते हैं। उक्त ग्रन्थ के विद्वान् संकलयिता ने लिखा है, "झूमर से हमलोग संताल, बाउरी प्रभृति छोटी जाति के लोगों के अश्लील गीत समझते थे। किन्तु सदुपाध्याय श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा ने देव-देवी विषयक तथा आध्यात्मिक भाव-सम्वलित बहुत से भक्ति-परक झूमर-गीतों की रचना करके इन्हें उच्चकोटि के शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में पहुँचा दिया है।"

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि स्वर्गीय द्विजेन्द्र एम० ए० ने लिखा है, "वैद्यनाथ धाम वासतव्य कविवर भवप्रीतानन्द झाक कविता-माधुरीक आस्वाद जनिका प्राप्त भेल छन्हि, हुनका निस्संकोच कहए पड़तन्हि जे वीणापाणिक एहि वरद पुत्रक लेखनी में अजस्र काव्य-शक्ति सन्निहित आछि।"

श्री विष्णुकांत झा जी ने "श्री वैद्यनाथ शिव प्रशस्ति "नामक अपने संस्कृत ग्रन्थ में लिखा है:—

"अनेकः ग्रन्थास्ते विरचमं शुवंह्नु वचसाम्
तथा लोकयंगीतं विदितमिह यस्यासि विपुलम्
स मान्यः पण्डेशो गिरिपति सुतेशार्चनरतो
"भवप्रीतानन्दो" जयति बुधवंद्यः कवि-वरः"

बिहार सरकार के संस्कृत अध्ययन-अध्यापन के निरीक्षणाध्यक्ष श्री रामनारायण शर्म्मा जी ने सन् १९४३ में ही सदुपाध्याय जी के संबंध में अपने भाव इन शब्दों में व्यक्त किये थे।

"एषा काव्यं नैसर्गिकम्। एतेऌज्जसा जनक वय इति वर्णयु शभ्यन्ते। मस्यै काल पारिपाकेणैते पाङ्गीतय पर्चाया म्भूमर्यादयश्च सविशेषकज्जनहृत्पीठ मधिष्ठास्यन्ति। यत्र तत्र गीतिषु जयदेव कविभीतिपंक्तीनां विद्यापति गीति पंक्तीनाञ्च झंकार संवाद्श्चाकल्प निमीलित दृशा"

संस्कृत के उद्भट विद्वान स्व० त्रिलोकनाथ मिश्र जी ने लिखा है—

"यावदिन्दुमिहि स्रै महीधरा: सिन्धवश्च सरलाश्च कासितिताम्
तावदस्य विदुषोअतिनिर्म्मला: सवत कृतिकला विराज"

१९६४ में भारतीय नृत्य कला मंदिर की ओर से सदुपाध्याय जी को 'लोक गीत विषयक लम्बी और निष्ठापूर्ण सेवाओं के लिए उन्हें एक ताम्र पत्र सम्मानपूर्ण भेंट के रूप में बिहार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री जी के द्वारा प्रदान किया गया।

## अभिनव विद्यापति

मैथिल कवि कोकिल विद्यापति एवं सदुपाध्याय श्री श्री भवप्रीतानन्द जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व में जितने अधिक साम्य हैं उतने शायद ही भारतीय वाङ्मय के दो कवियों में अन्यत्र कहीं मिल सकें। साहित्य के इतिहास में ऐसा देखा जाता है कि यदि दो महान् कवियों में साम्य पाया जाय तो अपर को पूर्ववर्ती कवि का अभिनव रूप ही समझा जाता है। स्वयं विद्यापति "अभिनव जय देव" के नाम से विख्यात हैं। विद्यापति एवं सदुपाध्याय जी में समता की मात्रा उस सीमा



तक पाई जाती है जहां अभिनव शब्द का प्रयोग पूर्ण स्वाभाविक हो जाता है। दोनों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अपूर्व साम्य है।

विद्यापति की तरह सदुपाध्याय जी उच्चकुलीन गृहस्थ मैथिल ब्राह्मण देशील बयना के प्रति विशेष आग्रहशील, काव्य प्रतिभा में गीत्यात्मक, धार्मिक समन्वय एवं सहिष्णुता के प्रतीक, जन-साधारण एवं पेशेवर गायक के कंठ में बसने वाले, अन्तर्प्रान्तीय ख्यातिप्राप्त, दीर्घजीवी, देव-मंदिर धर्मशाला आदि के निर्माता, शिव के आराधक, शक्ति के उपासक और विष्णु की इह-लौकिक लीला के गायक हैं। विद्यापति की ही तरह सदुपाध्याय जी को भी बंगाली विद्वानों ने अपनाने का असफल प्रयास किया है। दोनों ने बुरे दिन देखे और उन्हें पूरे धैर्य, आत्म-विश्वास तथा कर्मठता से झेला। विद्यापति की तरह सदुपाध्याय जी भारतीय वाङ्मय के अमूल्य रत्न हैं जिनका प्रकाश दिन-दिन नवीनता प्राप्त करता रहेगा।

हम अपने 'अभिनव विद्यापति' का हृदय से अभिनन्दन करते हैं और इनके सुदीर्घ जीवन की कामना रखते हैं।

वैद्यनाथ-धाम देवघर।
१५-६-१९६८

भोलानाथ झा
प्राचार्य



# ❀ सूची पत्र ❀

विषय पृष्ठ





विषय पृष्ठ



## कृष्ण के मथुरा गमन

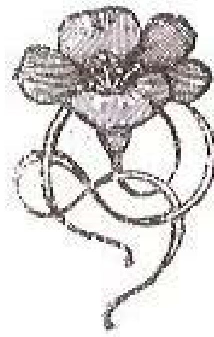
## गणेश महिमा

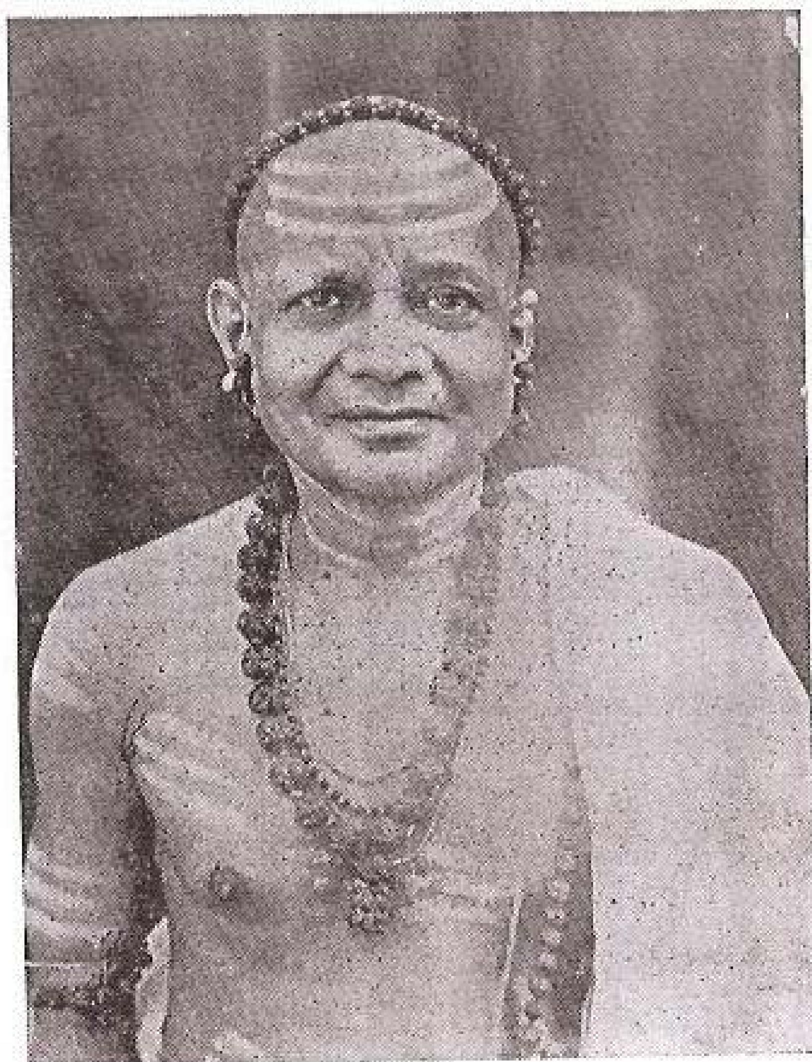






## राष्ट्रीय झूमर





सदुपाध्याय

श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा

( वैद्यनाथ मन्दिर के मठाधीश )

जन्म
(आश्विन कृष्ण नवमी
बुद्धवार को सन् १८८६ ई० )

वर्त्तमान उम्र ८२ वर्ष
(१६ सितम्बर १९६८

# भवप्रीतानन्द  पदावली

(१) भजन (शिव स्तुति)

॥ धुन ॥ जय जयति हर हर, करुणा सागर,
चन्द्र-धर, परमेश्वर ॥

स्फटिक तन पर भस्म फण-धर
डमरू शूल-धृत श्रीकर ।
पीत जट पर गंग सुन्दर
हेम गत हीरक तर ॥ धुन ॥

वासव निज कर करत चामर
छत्र वर धर श्रीधर ।
रमत वृष पर प्रेत सहचर
पूजत सुर नर खेचर ॥ धुन ॥

अर्द्धनारीश्वर, करी चर्माम्बर
त्रिनेत्र त्रिगुण गुणाकर ।
तारहु "पामर भवप्रीता नर"
पतित पावन शंकर ! ॥ धुन ॥

(७) भजन ( मचारी )

॥ धुन ॥ देखु जोगिया के रंग, देखु जोगिया के रंग ।
तपसीके भेषधारी नारी अरधंग ॥

विहसित पंचमुख, आनन्द उमंग ।
कपारें अगिनि, जटां गंग तरंग ॥ धुन ॥

हाथें अभय वर, कुठार कुरंग ।
शीश पर मुकुट जे विकट भुजंग ॥ धुन ॥

गौर वरण तीन नयन सुढंग ।
भालें सुधाकर, गलें गरल प्रसंग ॥ धुन ॥

अनका के देथिन् , अन्न वसन सुरंग ।
अपना ले भांगगोला, रहथिं उलंग ॥
"भवप्रीताक्" देव हर ! चरण सुभंग ।
देहा छाड़िक् उड़े बेरी पराण विहंग ॥ धुन ॥





# ❀ झूमर–शतक ❀



## झूमर (१)—शिव वन्दना

( अयुक्ताक्षरी मात्रा वर्जित )

॥ धुन ॥ भजत रह हर पद कमल ॥

भगत-जन-नरक-शमन करण मन सफल ॥ धुन ॥
रजत वरण पन्च वदन असम नयन मदन दहन
दमन शमन बल
चरम वसन, गरल-अशन सदन-वर-अचल ॥ धुन ॥
तन पर कत उरग चपल झल–मल शव भस्म धवल
सजल जट सकल ।
वलद ऊपर रमत नगर, नमत अमर दल ॥ धुन ॥
भवस कहत "भव" इ वचन जनम-मरण-करह-हरण
वरह पद अटल ।
तवऊ भवन गमन करण करह पथ सरल ॥ धुन ॥

झूम्मर (२)—(शिव महिमा)

गौर अङ्ग जटाँ गङ्ग सुमुकुट मणिमय भुजंग
लये सङ्ग उमा के आदर से ।
॥ धुन ॥ चलला धाकर से ॥

सर्वाधिराज गमन साज, देखि धावे अमर राज
सह समाज सेवेलै छत्र चौरँ से ।
मिलला ईश्वर से ॥ धुन ॥

आध खेत भूतप्रेत, आधमें सुरदल समेत
शोभा देत, प्रमथ अमर से ।
प्रभु के लस्कर से ॥ धुन ॥

करुणाकर ! जनमहर, ताकूँ एकहि नजर
मांगे वर भवप्रीता हर से ।
करुणा सागर से ॥ धुन ॥

झूम्मर (३)—(शिव स्वरूप वर्णन)

भांगे आँखि ढुलू-ढुलू, भांगे आँखि ढलू ढुलू
भांगे आँखि ढुलू ढुलू ।
जटाँ बीच गङ्गा कुलू-कुलू ॥
॥धुन॥ भांगे आंखि ढुलू ढुलू ॥



ईश्वर शिव सुन्दर, हेम गौर कलेवर
भांगे आँखि ढुलू ढुलू ।
देहा पर सँपा छुलू मुलू ॥ धुन ॥

कपारें किशोर चाँद, दाढ़ां-बाघ छाल बांध
भांगे आंखि ढुलू ढलू ।
कान में धथुरा झुलू-झुलू ॥ धुन ॥

रमत वृषभ पर, कोरें गौरी गणेशर
भांगे आंखि ढुलू ढुलू ।
नाचे भूता हँसे खुलू खुलू ॥ धुन ॥

भवप्रीताक् निवेदन अन्तें दिहा श्रीचरण
भांगे आंखि ढुलू ढुलू ।
(जैसें) यमें ताकी रहे मुलू मुलू ॥ धुन ॥



(४) झूम्मर वैद्यनाथ-स्तुति (बंगला में)

जय जय प्रभु ! जय महेश, वैद्यनाथ शिव सुरेश,
रुद्र वेश, शेष मुकुट साजे ।
भक्त क्लेश पापलेश, कर विनाश व्योमकेश
भाल देश मण्डित द्विज राजे ॥

॥ धुन ॥ डिमि डिमि डिमि डमरू, करे बाजे, करे बाजे
अभय चरणे देहि शरण प्रणमि प्रमथ राजे ॥
नाचत प्रभु भूत संग विभूति भूषित धवल अंग
कत भुजंग अंग–अंगे साजे ।
क्रोधे दग्ध भेल अनंग, त्रिशूले त्रिपुर अङ्ग भङ्ग
करे कुरङ्ग वराभय टङ्क साजे ॥ धुन ॥
त्रिनयने रवि सोम हुताश, पञ्च वदने मधुर हास
करे विलास सुरधुनी जटा माझे।
अन्तरे होवल कृपा विकाश, शमन पाश त्रास नाश
करिलेन प्रभु ! द्विज सुत हित काजे ॥ धुन ॥
सिन्धु मथने उपजे गरल, भये त्रिभुवन करे टलमल
सुर दल अति कम्पित भय लाजे ।
सदय आपनि हये महावल ! तरल गरल कण्ठे अचल
करिया, नील-कण्ठ रूप विराजे ॥ धुन ॥
परमा प्रकृति करिया धारण, त्रिगुणे त्रिमूर्ति करि प्रकाशन
सृजन पालन संहरण तीन काजे ।
भवप्रीता भणे जीवने मरणे, मम गति तव अभय चरणे
एई रूप जेन हृदये सतत राजे ॥ धुन ॥



(८) झूमर (झुमटा)

चितें चरणमा, कि रूप नयनमा, रसनमा में
॥ धुन ॥ दुर्गा नाम रटनमा रसनमा में ॥
चरित श्रवणमा कि महीमा मननमा जीवनमा में ।
भक्ति रस सिंचनमा जीवनमा में । धुन ॥
हाथ से पूजनमा कि अन्तरें जपनमा चलनमा में ।
नित देवी प्रदक्षिणमा चलनमा में ॥ धुन ॥
"*भवप्रीता*" मनमा कि दुर्गा शरणमा मरणमा में ।
जैसें ने छुए शमनमा मरणमा में ॥ धुन ॥
(मैयाक् ज्योति मिलनमा मरणमा में) ॥

——— o ———

(९) झूमर (भदवारी) निर्गुण

देखो माया के बादरा, देखो माया के बादरा
॥ धुन ॥ देखो माया के बादरा ॥
लोभा के राम धनुक् शोभा उजियारा ॥ धुन ॥
भव नदी बांध घोर, वासना के ढेउ जोर,
मोह अंधियारा ।
क्रोध के बज्र हुंकार, काम जल–धारा ॥ धुन ॥

मद के बहै तूफान मात्सर्य बिजुली जान
हम दिशा हारा ।
अगम अथाह् पानी बीचें जाय मारा ॥ धुन ॥
भवप्रीता कहै सार, तयो हमें होयै पार
जों मिले सहारा ।
खेपन हार भोला नाथ, नावक् नाम तारा ॥ धुन ॥

(७) झूमर (भदवारी) निर्गुण

धन जन परिवार छणमें सभे उजार
दारूण संसार ।
छीरे, दारूण संसार ॥
॥ धुन ॥ तोरा सें उचटै जी हमार रे, दारूण संसार
प्राणी सभे काल के आहार रे, दारूण संसार ॥
माटी लागी काटा काटी, नारी लागी लाठा लाठी
दारूण संसार ।
पेट लागी कतै पापाचार रे, दारूण संसार ॥ धुन ॥
रोग शोक अपमानि नारी सुत धन हानि
दारूण संसार ।
बरषये बरछी जे हजार रे, दारूण संसार ।
काहुँ हांसी काहुँ हाहाकार रे, दारूण संसार ॥ धुन ॥



"भवप्रीता" कहे सार, एकहि चैतन्याधार
दारूण संसार ।
आरो सभे स्वपन आकार रे, दारूण संसार ।
तोर माया "बेड़ी-कारागार" रे, दारूण संसार ॥ धुन ॥

(८) झूमर निर्गुण

खाली हाथें एका आय, भूललों धन जन पाय ।
अन्तरँ हुलाशा रे मन,
अन्तरें हुलाशा ।
कामिनी कांचन लागी, बाढ़त पियासा
रे मन ! चारि दिनक् बासा ।
पानी के बताशा जैसें तन के तमाशा रे मन ॥
॥ धुन ॥ चारि दिनक् बासा ॥
माटी पानी अगिनी आर पवन सहित चार
पंचम आकाशा
रे मन ! पंचम आकाशा ।
ताहि से गठित देहा तेकरो कि आशा रे मन ॥ धुन ॥

तब लागि सुत नारी, वित्त ओ महल भारी

जब लागि श्वांसा

रे मन ! जब लागि श्वांसा ।

देतो रे ! कंचन काया, जारिकेँ हुताशा रे मन ॥धुन॥

"भवप्रीता" कहै सार, यातायात बारम्बार

बांधन करम पाशा

रे मन ! बांधन करम पाशा ।

कालीकें चरण ध्यानें छुटै जनम् त्रासा रे मन ॥धुन॥

---

## (९) झूमर निर्गुण

॥ धुन ॥ माया के संसार, यहां सदा कोयने रहनहार

माया के संसार ॥

ने रहला राम-श्याम, नें अर्जुन, नें बलराम,

भीष्म द्रोण कर्णक् नें उबार ॥ धुन ॥

गाछ वृच्छ पशु पाखी, जे सब देखल् जाय आँखी

सेहो सभे काल के आहार ॥ धुन ॥

एक ब्रह्म अविनाशी, सदा सर्वत्र निवासी

"भवप्रीताक" दुर्गा नाम सार ॥ धुन ॥





## (१०) झूमर ( कृष्ण जन्म वाला )

( छन्द ) पवार

पताल में छले जते मताल असुर ।

द्वापरें धरती-पर जन्मल क्रूर ॥

राजा बनी करे धरम् के नाश ।

वंश बढ़ाय करे पाप विकाश ॥

पाप भारें वसुमति के जे क्लेश ।

गो रूप धरी के जाय जहाँ "हृषिकेश" ॥

कान्दी धरणी करै विपद प्रकाश ।

"माधव" कहला-करब दुख नाश ॥

लेब-जनम-हम, तोहरा ऊपर ।

नाश करब सब दनुज पामर ॥

---

झुम्मर

भादव राति अन्धार घोर, गरजै बादल बरषे जोर,

उमड़े–बिजुली–लहरी ।

बहे तूफान अति भयान

उखड़त तरू बलरी ।

॥ धुन ॥ कारा गृहें जनमल आजु श्री हरि

मोह रजनी मोहित प्राणी,

अचेत सहित प्रहरी ॥धुन॥

देवकी गर्भ सें प्रभु जनमल,

नीलमणि जित बरण श्यामल,

पीताम्बर पहिरी ।

चारि हाथ, लोकनाथ

कमल नयन छितरी ॥ धुन ॥

रूप हेरी पितु मातु चकित

करत स्तवन अन्तर प्रीत ।

शिशु कहे वाणी मधुरी,

चलहु तात ! मोहि ले साथ

गोकुल, नन्द-नगरी ॥ धुन ॥



नन्दिनी जनम दये जशोमती

मोह निन्द्रा गत, सगरो राति ।

ताहिके पाश मोही धरी ।

नन्द सुता लेव, जननी के देव

देखत ने कोइ नजरी ॥ धुन ॥

कृष्ण लये बसुदेव ठाढ़,

चिन्तित देखी जमुना बाढ़,

पार भेल एक शियरी ।

भवप्रीता गाय, बसुदेव जाय

कृष्ण राखी लेल शंकरी ॥ धुन ॥

(१२) झुम्मर छन्द ( पयार )

जागी प्रहरी भोरेँ कंस ठोर गेल ।

नन्दिनी जनम खबर तब देल ॥

सुनेतैँ कैद घर कंस जे गेल ।

जातहिं कन्या उठाय के लेल ॥

पैर धरी नभ में घुराय जे लेल ।

बध-शीला पर, पटकी जे देल ॥

छोड़ेतें देवी उड़ि ठेकली आकाश ।

कहथीं कंस प्रति मुखे मृदुहास ॥

झूमर (भादुरिया)

आकाशसँ भगवती, पापी कंस से कहथीं
दिन राति तोर काहे ई कुमतिया ?
कि दिन राति ॥
॥ धुन ॥ मोरा मारेक् नहीं केकरो शक्तिया
कि मोरा मारेक् ॥
तोरा करेले संहार, "हरि" लेला अवतार ।
गोकुला में, खेले पलना पर शुतिया
कि गोकुला में ॥ धुन ॥
कही हँसी खल-खल, गेली माता विन्ध्याचल
बसी गेली जोगमाया के मूरतिया
कि बसी गेली ॥ धुन ॥
"भवप्रीता" तहाँ जाय, चरणे मस्तक नाय
"गेँदा माला", शिरेँ खसले तुरतिया
कि गेँदा माला ॥ धुन ॥

(१३) झूमर (भदुरिया)

देव देवी हरषित नाचे अपसरिया
बरसावे, सभीं फुलवा के झरिया,
॥ धुन ॥ कि बरसावे ॥



व्रजपुरेँ गोप गोपी आनन्दें भरिया
दही घोरी, सभीं खेले पिचकरिया
कि दही घोरी ॥ धुन ॥
दही सेँ पिछरी भेल, गोकुल नगरिया
दौड़बैतेँ, खसे कतेजे सुन्दरिया
कि दौड़बैतेँ ॥ धुन ॥
"भवप्रीता" कहे हरि ! ने जायह, बिसरिया
भौव-सागर, तीरेँ, दिहा पद तरिया
कि भौव सागर ॥ धुन ॥
(कृष्ण जन्म पाला समाप्त)

---

(भाटवारी भादुरिया)

(१४) झूमर (कृष्ण बाल्य लीला वर्णन)

अंगना में नन्द रैया, देखी देखी नितरैया
दैया नाचत कन्हैया ।
ताली देथीं जशोमती मैया,
॥ धुन ॥ रे दैया, नाचत कन्हैया
झमकी ठमकी तातक् थैया रे दैया नाचत कन्हैया ॥

नीलमणि लजबैया, नांगटे देहा शोभैया

दैया नाचत कन्हैया ।

बथना कें धूरीं धुसरैया रे दैया ॥ धुन ॥

चूड़ा में मोर पाँखैया, हाथें बांशुरी बलैया

दैया नाचत कन्हैया ।

दाड़ां-पैरीं-घुंघरु पिन्हैया रे दैया ॥ धुन ॥

"वेदांत"-कें-नीचोरैया, नाचे भूवन गोसैंया

दैया, नाचत कन्हैया ।

भवप्रीताक् नैया खेपैया रे दैया ॥ धुन ॥

——— ० ———

(१८) झूमर (दड़ कुमरा)

नंद के छयला कृष्ण वयसें नवीन गो

बजावये, बंशी पैशी विपिन गो

बजावये ॥ बंशी...

प्रेम चारा गांथी बंशी, फेकले गोविन् गो

चारा लोभें, बाझि गेले मन मीन गो

चारा लोभें ॥ धुन ॥



बंशी संगे टानी मोही-आनी निज ठीन गो,

निज जन सतीं करि देल मीन गो

निज जन ॥ धुन ॥

"भवप्रीता" कहे युगल मिलन रंगीन गो

ब्रह्म संगे, माया भये गेले लीन गो

ब्रह्म संगे ॥ धुन ॥

——— ० ———

(१९) झूमर (गोपिनी द्वारा कृष्ण रूप वर्णन)

॥ धुन ॥ त्रिभंग मूरति सोहान गे दूती !

श्यामली सूरति सोहान ॥

नील कमल वदन, भौंआ धनुका जैसन ।

नैना सें मारे हियां बाण गे दूती ॥ धुन ॥

नील अंगे पीताम्बर, मेघें-बिजुली-सुन्दर,

बिहुँसी के छीने नारी प्राण गे दूती ! ॥ धुन ॥

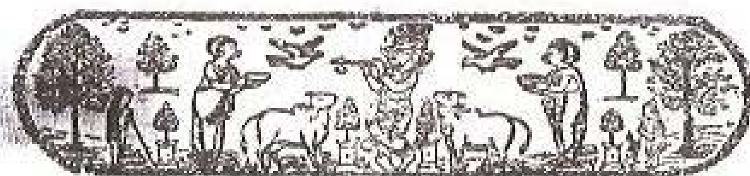
देखी के रूप विलास, ने मिटे आंखी पियास,

"भामिनी" तेजे अभिमान गे दूती ॥ धुन ॥

व्रज बधु बधे लागी, बंशी टेरे राति जागी,

"*भवप्रीताक*" हरि पदें ध्यान गे दूती ॥ धुन ॥

(१७) झूमर (माडुरिया) कृष्ण लीला



सांझे गेलों भरे पानी,
तहां आवे निलमणि
बीचे घाटे करे झिका झोर,
॥ धुन ॥ सखि रे, बड़ी हठी 'कालिया किशोर' !
बड़ी हठी कालिया किशोर
सखि रे ! बड़ी हठी कलिया किशोर ॥
बुझालें ने बुझे बात, दिये चाहे देहें हाथ
शिरके गगरी फोड़े मोर
सखि ! शिर के गगरी फोड़े मोर ॥ धुन ॥
दौड़ी कें गेलों पराय, पीछु दौड़ी लपटाय
देल मोर बहिया मरोर
सखि ! देल मोर बहिया मरोर ॥ धुन ॥
हेरी किशोरी किशोर, "भवप्रीता" प्रेमे भोर।
चन्दा हेरी जैसन चकोर
सखि, चन्दा हेरी जैसन चकोर ॥ धुन ॥



(१८) झूमर ( दांड़ झुमरा ) कृष्ण लीला
बछरू खोजेल गेलों साझें बथान
रे कदम तर।
॥ धुन ॥ पाछु आवि श्याम लपटान रे कदम तर
चोलिया धरी कन्हैया, देल जोरें टान
रे कदम तर।
हार टूटी मोती छीतरान रे कदम तर ॥ धुन ॥
छीनयो मूरली कान्हा ! चुरबो गुमान
रे कदम तर।
जशोदा से सिखाबो बिहान, रे, कदम तर ॥ धुन ॥
तयो नहीं छोड़े कान्हा मुहें मुसुकान
रे कदम तर।
भवप्रीताक् युगल पदें ध्यान
रे कदम तर ॥ धुन ॥

---

(१९) झुमर (दांड़ झूमरा)
सांझें बेरी बीचे घाटें थाड़े नीलमणिया
कैसें जाबे, नीर भरेले सजनिया
कैसें जाबे ? ॥ धुन ॥

गेलें सभी सोझे श्याम करे छेड़ खनिया
नहीं राखे-लाज, ने छोड़े शैतनिया ।
॥ धुन ॥ नहीं राखे-लाज, ने छोड़े शैतनिया ।
तोड़ी देत चोली बन्दा, छीनते ओढ़निया
से हो देखी रे, हँसते सभे जनिया
से हो देखी, हँसते सभे जनिया ॥ धुन ॥
भवप्रीताक हे राधे, राखूँ मोर वाणिया
भरी लिहा, सुखें श्याम प्रेम पनिया,
भरी लिहा सुखें श्याम प्रेम पनिया ॥ धुन ॥

(२०) झूमर (ढाढ़ झूमरा) एक ब्रज बाला के उद्गार

तिरिया जनम जों देभे गोसैंयां लाल ।
दिहा देवा रे !
कन्हैया ऐसन पिया लाल दिहा देवा,
॥ धुन ॥ रे, कन्हैया ऐसन पिया लाल दिह देवा
तिरछी नजरी दिहा, मोहिनी हँसिया लाल
दिहा देवा रे,
पीरिति भरल् हिया लाल दिहा देवा !
रे, पीरिति भरल् हिया लाल दिहा देवा ॥ धुन ॥



पतरी कमरी दिहा नामी जे केसिया लाल
दिहा देवा ! रे,
योवना जैसन कीया लाल दिहा देवा !
रे, योवना जैसन कीया लाल दिहा देवा ॥ धुन ॥
"भवप्रीता" कहे हरि ! राधा संगें लिहा लाल
होयहा देवा !
मोर अन्तर बसिया लाल होयहा देवा
रे, मोर अन्तर बसिया लाल होयहा देवा । ॥धुन॥

(२१) झूमर (झुमटा)

मोहन जी के हँसीया कि मोहन जी के बँसीया
मोहन जी के हँसीया कि मोहन जी के बँसीया
दुहू डारें,
जे गोपिनि गरें फँसिया कि
दुहू डारें...॥ धुन ॥
नैना तिरिछिया कि कदम्ब बिरिछिया
नैना तिरिछिया कि कदम्ब बिरिछिया
दुहू मारे—
नारी हियरां बरछिया कि
दुहू मारे ॥ धुन ॥

शामली सुरतिया कि कपट पीरितिया
शामली सुरतिया कि कपट पीरितिया
दुहूँ नाशें—
रे, कामिनी कुल जतिया कि
दुहूँ नाशे ॥ धुन ॥
"भवप्रीताक्" मतिया कि "भवप्रीताक" गतिया
दुहू करें ।
युगल चरणें बसतिया कि
दुहू करें ॥ धुन ॥

(२२) झूम्मर (झुमटा) कृष्ण लीला

गेलों गगरीया ले जमुना किनरिया ।
गेलों गगरीया ले, जमुना किनरिया ।
कदम तरें ।
॥ धुन ॥ छैला बँसीया बजावे, कदम तरें ॥
बँसीया बजावै कि हँसीया देखावै,
बँसीया बजावै कि हँसीया देखावे,
नयना-बाणे !
मोर हिया जे डोलाबे, नयना बाणे ॥ धुन ॥



बिनतीं रिझावे कि पीरिति बुझावे
बिनतीं रिझावे कि पीरिति बुझावे
निकुँज बने—
सांझे मिलेले बोलावे, नकुंज बनें ॥ धुन ॥
"भवप्रीता" गावे कि हरि से मनावे ।
"भवप्रीता" गावे कि हरि से मनावे,
चरण नैया—
जैसें आखिरी पावे, चरण नैया ॥ धुन ॥

(२३) झुम्मर (झुमटा) (गोपिनीक् बिरह वेदना)

मेघा घहरावे कि पानी बरषावे,
मेघा घहरावे कि पानी बरषावे
॥ धुन ॥ बन्धुआ लागि, राति जीहा तरसावे
झलके बिजुलिया कि कुहके कोयलिया
पपीहा पापी—
पिया पिया सुनावे, पपीहा पापीं ॥॥ धुन ॥
पिया मन भावे कि मदन सतावे,
पिया मन भावे कि मदन सतावे
उमड़े रसें ।
मोर योबना पीरावे उमड़े रसें ॥ धुन ॥

फूलें गुंजे भौंरा कि डारी नाचे मौरा
फूले गुंजे भौंरा कि डारी नाचे मौरा
भवप्रीता
हरि-चरणों लोटावे कि भवप्रीता ॥ धुन ॥

(२४) झूम्मर ( भादुरिया ) कृष्ण लीला

नन्द के गैया चरैया, गोपिन के पकरवैया,
॥ धुन ॥ दैया, वंशी के बजैया !
लोति-लोति थाड़े कदम छैया रे दैया ॥धुन॥
॥ धुन ॥ वंशी के बजैया
निपटे निठुर कान्हूँरैया रे दैया ॥ बंशी के
संगमें बलराम भैया, दुयो बड़ी निरदैया
दैया, बंशीके बजैया ।
नारी दुख नहीं, बुझवैया रे दैया ॥ धुन ॥
लपकी धरे कलइया, छोड़ालों ने छोड़वैया
दैया, बंशी के बजैया ।
बिन बीहां बने चाहे सैंया रे दैया ॥ धुन ॥
"भवप्रीता" के रखवैया, तोहीं कुमर कन्हैया,
दैया, बंशी के बजैया ।
आखिरी राखिह अपन पैंया रे दैया ॥ धुन ॥



(२५) झूम्मर

कदमा के डारे चढ़ि बोले कोइलिया
॥ धुन ॥ ताहिं तरें, नागर वजावै
वंशुरिया कि ताहि तरें ॥
गरजी बरषे मेघा, चमके बिजुलिया
कि नाचे मोरा,
खोली पुछके टिकुलिया कि नाचे मोरा
भौंरा गुंजरे चुमि नवफूल कलिया
कि मह-मह !
करे चम्पा चमेलिया कि मह-मह ! ॥ धुन ॥
"भवप्रीता" हृदि बीचें राधा अलबेलिया
संग लये,
नाचे मोहन शामलिया कि संग लये ॥ धुन ॥

(२६) झूम्मर (घटवारी भादुरिया) कृष्ण लीला

ठीके रे, सभोती बेरीं, वटिया भेटला हरि
वहींयां धरे मरोरी,
अंखियां सें करे चिताचोरी,
॥ धुन ॥ देलयीं गगरी फोरी ।

दानी देला चोली बन्दा तोरी ।
देलथीं गगरी फोरी ॥
लाजें आंखि गेल भरी, बुझावलों कते करी,
एकोने सुनथी मोरी ।
गियारीं लगाये झीका झोरी ।
देलथीं गगरी फोरी । ॥ धुन ॥
तनी भेलों आगुसारी, तुरते लपकी हरि,
कलशी निशान धरी ।
मारी देला पथरा बलोरी
देलथीं गगरी फोरी ॥ धुन ॥
भवप्रीता प्रेम भरी, हरि पदें ध्यान धरी,
गावथीं कर जोरी ।
बसी गेला चितें युगल जोरी ।
देलथीं गगरी फोरी ॥ धुन ॥

(२७) झूम्मर (भादुरिया) कृष्ण-लीला

शीतल जमुना वारी, सहेली संगाती जोरी,
नहावे छलों उघारी ।
चुपके सें बस्तरा बलोरी, चढ़ला कदमा डारी ।



॥ धुन ॥ चिरसंगें चितकरि चोरी,
चढ़ला कदमा डारी ॥
पानी में छाया निहारी, ताकलों ऊपर धरी,
डारी परें धरी सारी ।
विहुंसी ताकथि बनवारी ॥ धुन ॥
मांगलों विनती करि, मुसकी कहथीं हरि ।
लेहो वस्त्र कर जोरी,
ऐसन काढ हठकारी ॥ धुन ॥
"भवप्रीता" कहे गोरी, लेहो चिर हथा जोरी,
प्रभु सें कि लाज भारी ?
हुनी घट–घट बसवारी ॥ धुन ॥
(उनके शिरजल देहा नारी)

(२८) झूम्मर ( भादुरिया )

सांझे गेलों जमुना अकेली जनिया
रे, एकेली जनिया ।
॥ धुन ॥ आवी एकेतनिया, धरे निलमणिया
पैंया पड़ो कान्हा, ओढ़े दे ओढ़निया
ओढ़े दे ओढ़नीया ।
छाड़ि देहो बहियां रे, भरब पनिया ॥ धुन ॥

फूटले गगरीया, टूटले कंगनिया,

टूटले कंगनियां ।

कि कहत सुनिया, सासु ननदिनिया ? ॥ धुन ॥

"भवप्रीता" कहे तोही, विनोदिनिया,

तोही विनोदिनिया

सभि गेले जानिया, श्याम सोहागिनिया ॥ धुन ॥

(२९) झूम्‍मर (गोपिनीक प्रेम वर्णन)

दये बंशी सिंधकाठि, हृदय भंडार काटि

कालिया किशोरा, कपट किशोरा ।

चित चोरावले चित चोर रे ।

॥ धुन ॥ कालिया किशोरा, कपट किशोरा ॥

तोरेने निरखी छन, आंधार लागे भूवन,

कालिया किशोरा ।

मेघा जोखें झरे आंखि लोर रे ॥ धुन ॥

चन्द्र मुख नाहि हेरी, धीरज बांधे ने पारी

कालिया किशोरा,

लुबधले नयन चकोर रे ॥धुन॥



"भवप्रीता" कहे हँसी, मोर हृदि कुंजें पैशी

कालिया किशोरा,

राधा संगे करह किलोर रे ॥ धुन ॥

(३०) झूम्‍मर (बसन्त रात्रि वर्णन)



॥ धुन ॥ चाननी सोहान मधु निशि, शशि उगे हँसी,

चाननी सोहान मधु निशि ।

हेरी एहो शोभा राशि, हँसी उठे दशो दिशि

यमुना बहती हँसी हँसी- शशि उगे हंसी ॥ धुन ॥

नाची नाची मोर हँसे, गोपिनी गोपाल हँसे,

कुमुदिनी हँसे जलें पैशी शशि उगे हँसी ॥ धुन ॥

आमके मंजरा हँसै, भौंरा गुंजरें हँसे,

चकोरा चकोरी मुंहे हँसी, शशि उगे हँसी ॥ धुन ॥

हँसे श्यामराय रूपसी, भवप्रीताक् चितें हँसी,

जे हँसी मिलावे अविनाशी, शशि उगे हँसी ॥ धुन

(३१) झूम्मर (गोपनीक प्रेम वर्णन)

---

तोहरो आवे के आशें रहलों जे कुंज वासें,
मोहन तोरे लागी ।
रतिया खेपलों जागि-जागी ।
मोहन तोरे लागी
चन्द्रावली कुंजे गेला भागी,
॥ धुन ॥ मोहन तोरे लागी ।
मदनके फूलशरें, मोर मरम विदरें,
मोहन तोरे लागी ।
जारे देहा बिरहके आगि ।
मोहन तोरे लागी ॥ धुन ॥
जेकर तोहें अनुरागी, सेहो चन्दा बड़भागी,
मोहन तोरे लागी ।
हमरा कें बनाल्है अभागी ॥ धुन ॥
भवप्रीता कहे हरि ! अन्तें दिहा पदतरी,
मोहन तोरे लागी ।
अधम जानीने दिह त्यागी ॥ धुन ॥



(३२) झूम्मर (भादुरिया) राधाक मान
चन्दा संगें रस रंगें रतिया बिताय
॥ धुन ॥ भोरक बेरियां रे बन्धु !
यहां काहे आय ?
निशि जागरण आलसें चरण टलाय,
नींदें अंखियां रे बन्धु !
झिपो झिपी जाय ॥ धुन ॥
पान पीकें गला तोर के देलो रंगाय ?
नवीन मेघिया रे बन्धु !
अरूण शोभाय ॥ धुन ॥
कजरा सिन्दुरा घामें, मुंहा झलकाय
तीर-बैणिया रे बन्धु !
भले वही जाय ॥ धुन ॥
भवप्रीता कहे राधा, बोलेरिसियांय
जाहो फिरिया रे बन्धु !
चन्दा रूसी जाय ॥ धुन ॥

(३३) झूम्मर (भादुरिया)
सुनी कें मुरली ध्वनि, चिहुकि उठलि धनि,
सुतली जे छली घोर नींद में ।

॥ धुन ॥ रे, बांसी ! बाजे विपिन में ॥
कल न पड़त निशिदिन में ॥ धुन ॥॥
राधा कहे सुन शखी मिलाह कमल आंखी,
अब ने जीयबे श्यामक भीन में ॥ धुन ॥
बिनूँ से चीक्कन काला, अन्तर उपजे जाला
जैसें जाला पानी बिनूँ मीन में ॥ धुन ॥
भवप्रीता कहै हरि ! अन्तें दिह पद तरी,
ने भेजिहा शमन अधीन में ॥ धुन ॥

(३४) झूमर (कृष्ण लीला)

जमुना में जल भरी, जाय छलों घर फिरी,
दूती ! ने बुझये बतिया ।
बाट रोकि छुए चाहे छतिया रे दूती !
ने बुझये बतिया ।
॥ धुन ॥ "मोहन" बड़ी उतपतिया रे दूती !
ने बुझये बतिया ॥
एके जे, सं झोती बेरी, सिर वो कांखे गगरी
दूती ! ने बुझये बतिया ।
मोरा नहिं कोइ संग सथीया रे दूती ॥धुन॥



लपकी लेल पकरी, भांगल दूयो गगरी,
दूती ! ने बुझये बतिया ।
आवे ने चले एको जुकतिया रे दूती ! ॥ धुन ॥
युगल मिलन हेरी, भवप्रीता प्रेम भरी,
दूती ! ने बुझये बतिया ।
पैरीं तरें खसल धरतिया रे दूती ! ॥ धुन ॥

(३५) झूमर (बंशी महिमा)

बांसु के बांशुरिया रे, बड़ी गुण तोर रे ।
॥ धुन ॥ हां रे, बांशी ! नाशले जाति कुल मोर रे ॥
तोरे शबदें बांशी ! भेले मति भोर रे ।
हां रे, बांशी ! चितेंजागे, कालिया किशोर रे ॥ ॥ धुन ॥
मना उचटावे रे, योबना करे जोर रे ।
हां रे, बांशी ! छटदे टपके नैना लोर रे ॥ धुन ॥
भवप्रीता कहे बांशी ! होये गेले शोर रे ।
हां रे बांशी ! तोही बांशी राधा चित चोर रे ॥ धुन ॥

(३६) झूमर

॥ धुन ॥ बांशुरिया ! तान में जोड़ले कैसें बाण ? २ ॥
बासु के बांशुरी तोंहें, नहीं आंखि कान,
बांशुरिया तैयो कैसें अचूक निशान ! ॥ धुन ॥

छीनले मदन सें कि भेंटलो दान ?
बांशुरिया, जही फूल वाणें ई गुमान ॥ धुन ॥
शब्दें मिलाये तीरा, करे वरिषान,
बांशुरिया, ले ले कत्ते अबला परान ॥ धुन ॥
शब्दें ब्रह्म मिलायये, कृष्ण भगवान्,
बांशुरिया, भवभीताक् हरि पदें ध्यान ॥ धुन ॥

(३७) झूम्मर (भादुरिया) राधाक् प्रति कृष्णक् प्रेम वर्णन

राधे ! तोर प्रेमें मजी, गोकुलां राखाल साजी ।
जीवन किशोरी !
गो चराये फिरी जे विपिन गो ।
॥ धुन ॥ तयो तोर दरश कठिन गो
जीवन किशोरी ।
मरमें मूरति आंका, मोर पांखा राधा लेखा
जीवन किशोरी !
नाम रटे बांशी निशि दिन गो,
दयाकर, जानीके अधीन गो ॥ धुन ॥
तोंही जीवन संगिनी, तोंही प्रेम तरंगिणी
जीवन किशोरी !
हम तोर प्रेमे पानिक् मीन गो
तोहरे बिरहें देहा खीन गो ॥ धुन ॥



खमाकरी संगे हरि, करिहि करूणा करि ।
ब्रजेन्द्र किशोरी ।
चिदानन्दें भवप्रीतालीन गो ।
एकमेव द्वितीय विहीन गो ॥ धुन ॥

---

(३८) झूम्मर

कामिनी कुंतल जाल, सेहो जाल महाजाल,
बाफी गेलो, बाफी गेलो गे, धनी !
॥ धुन ॥ रसिका नागर कि बाफी गेलो ॥
कटाक्ष भ्रूभंग रंगें, अनंगके वाण संगें,
मारि देली, मारि देली गे धनी !
हरिणा समान वाखे मारि देली ॥ ॥ धुन ॥
देखाये मधुर हाँस, लगाली पीरिति फाँस,
बान्धी लेली, बान्धी लेली गे धनी !
चोराके समान, पाशे बांधी लेली ॥ धुन ॥
अलिके कमल मधु, चकोरा के जैसन विधु
मोरा लेखें; मोरा लेखें; गे धनी !
तहूँतें तैसन कि मोरा लेखें ॥ धुन ॥

(३९) झूमर (वर्षा आगमन)

वरषा ऋतु मंत्री आज, राजा भये मदन राज,
समर को पधारे।
समर आश, विरही नाश, दादुर हलकारे,
॥ धुन ॥ बाजत घन मदन के नगारे।
वरषत् बुन्द सायक खरधारे ॥
बिजुली तलवार जान, देत वीर सघन शान,
विरही हिया फारे।
चातक पिक गुण अधिक गावत सुख सारे ॥ धुन ॥
साजत सैन्य चारि ओर, शंख ध्वनि करत मोर,
झिंगुर के पहारे।
आयुधकुल विविध फूल, विरही को सहारे ॥ धुन ॥
रण विचारि अति दुरस्त, रवि-शशि उभय अस्त
मेघ पछुवारे।
चकित प्राण हरि के गान "भवप्रीता" उचारे ॥ धुन ॥

(४०) झूमर (गोपिनोक् प्रेम वर्णन)

दूती ! पनिया वरषे, झिंगुर झंकारे प्राण
॥ धुन ॥ ने रहत वशें, दूती, पनिया वरषे ॥



राति अंधारी घोर, बिजुली चमके जोर,
दूती ! पनिया वरषे।
मेघा गरजे मौंरा कुहके हरषे ॥ धुन ॥
एकसरी लागे डर, हिया कांपे थर-थर,
दूती ! पनिया वरषे।
निन्दो नाही' बिनु श्याम सरस परशे ॥ धुन ॥
केतकी चापा बकूल, फूटे कत्त मत फूल
दूती ! पनिया वरषे।
पपीहा के पिया डाकें जीहा तरसे ॥धुन॥
विरह वेकल प्राण, मदने हानत वाण
दूती, पनिया वरषे।
"भवप्रीता" युगल रूप उरसें दरशे ॥ धुन ॥

(४१) झूमर

गरजे बदरिया कि बिजुली लहरिया
हो राम ! राति अंधरिया।
॥ धुन ॥ रिमी झिमी बरषये झरिया हो राम !
राति अंधरिया।
कैसें जायबे एकसरिया हो राम ?
राति अंधरिया।

जमुना किनरिया कि कुंज भीतरिया, हो राम !
राति अंधरिया ।
मोहन बजावे जे बांशुरिया हो राम ।। धुन ।।
सुनिकें बांशुरिया कि चित् बउरिया हो राम !
राति अंधरिया ।
दँशै विरह विषधरिया हो राम ।। धुन ।।
राति अंधरिया ।
इ भव सागरिया कि बड़ी भयंकरिया हो राम !
राति अंधरिया ।
"भवप्रीता" मांगें पदतरिया हो राम ।। धुन ।।
राति अंधरिया ।
( कैसें तरबे बिनूँ तारिया हो राम )

—— ० ——

(४२) झूमर (भदवारी) राधा के प्रेम वर्णन

सपना सगुण देखी, हरषी उठली सखी,
दूतीसे कहथीं बतिया ।
फरकी उठलो वाम अँखिया,
।। धुन ।। आजुरे; आवते कालिया ।



उरेखी बांधली जुरा लगावली पानक् बीरा
बिछावली झारी सेजिया ।
जागि रहली धनी रतिया ।। धुन ।।
श्याम शबद सुनी, चमकी उठली धनी,
मिलली आगु लागिया ।
प्रेमें छल-छल चारी अंखिया ।। धुन ।।
अंग परश सुखें, मूरछिता पति बुकें,
मुखसें ने फुटे बतिया ।
भवप्रीता भावे वनमलिया ।।धुन।।

(४३) झूमर (भादुरिया)

सुनी बांशुरी शबद, हियां उठले दरद
राम ! गेलो कुंज गलिया ।
बींधे तीरें मदन खेअलिया हो राम !
गेलों कुंज गलिया ।
।। धुन ।। मिले लागी मोहन शामलिया हो राम !
गेलों कुंज गलिया ।।
गरजे बरषे घन, एकेली डरावे मन ।
राम ! गेलों कुंज गलिया ।

रही रही छटके विजुलिया हो राम ।
गेलौं कुंज गलिया ॥ धुन ॥
फूलले कदम फूल, सौरभेंजे मारे शूल
राम गेलौं कुंजगलिया ।
नाचे मोरा कुहके कोयलिया हो राम ।
गेलौं कुंज गलिया ॥ धुन ॥
खोजलौं राति सगर, कहूं ने मिले नागर
राम ! गेलौं कुंज गलिया ।
*भवप्रीता* चिते वनमलिया हो राम ।
गेलौं कुंज गलिया ॥ धुन ॥



### (४४) झूमर (घाटबारी दांड़ झूमरा)

चांद मुंहें धीर हँसी, गीयारी लगाय फांसी,
ई केकरी बहुआरी ?
॥ धुन ॥ नैनासें तीरा दिये मारी ।
ई केकरी बहुआरी ?
गोर देहें सोभे नील सारी
ई केकरी बहुआरी ?



एक धरे माथ परें, दूसरे कखीया धरे,
ई केकरी बहुआरी ?
छाती परें धरे दु गागरी ।
ई केकरी बहुआरी ॥ धुन ॥
केशा कमरी लोटाय, नाकें वेसरी सोभाय,
ई केकरी बहुआरी ।
जेवरा झलके बलिहारी ॥ धुन ॥
ताकेय्ते जुगल जोरी, *भवप्रीता* कर जोरी,
ई केकरी बहुआरी ?
खसे पैरी आंखी प्रेमवारी ॥ धुन ॥

### (४५) झूमर

फुटे कदम वन अरू केतकी वन
छाय घटा घन शावन के।
अब रति नायक, ले फूल सायक
मारन लागे विरही जन के ॥
॥ धुन ॥ वरषाने तरसावत जीहरा
सखी रे ! बिनु मनमोहन के ।

टपकत बुंदन नाचे शिखी गण

कुहकन कोकिल कुंजन के ।

दमकत दामिनी पिऊ बिनूँ कामिनी

बिलपत यामिनी जागन के ॥ धुन ॥

पपीहा दादुर डाहुक झींगूर

करत शोर चहुँ ओरन के ।

कल-कल नादिनी बहुत तरंगिणी

बहत भिकोरा सुपवन के ॥ धुन ॥

इ सुख रजनी दरश ही सजनी

जिहा चाहत पिऊ मिलन के ।

भवप्रीता गति श्री राधापति

मति आश्रित हरिचरणन के ॥ धुन ॥

—•:•—

(४६) झूमर (झुमटा)

लटकै शावन घन हेरी उचटे मन

कुहकत वन-वन मोर, ए राम !

शून भवन बीचें दामिनी छन-छन

॥ धुन ॥ दमकत छाई चहुँ ओर, ए राम !



पापी पपीहरा पिऊ पिऊ बोलै

सुनी शाले हिया मोर, ए राम !

पवन झीकोरें वन-तरु वर डोले

वरषे गरजी घनघोर, ए राम ! ॥ धुन ॥

राति अकेली डर लागे सेजिया पर

प्रीतम नहीं घर मोर, ए राम !

मारे मदन शर बेकल अन्तर

बाला योवना करे जोर, ए राम ॥ धुन ॥

जल तट दादुर झींगूर बोले

सारस करत अनोर, ए राम !

"भवप्रीता" तनमन ओ नयन बीच

खेलत नन्द किशोर, ए राम ॥ धुन ॥

(४७) झूमर

सजनि सुनु वचन, चित भेल उचाटन

बाजे घन बँशी-बँशीधर के

॥ धुन ॥ राति दुपहर के ॥

वरषे शावन राति, निपटे अंधार अति

कैसें दूती ! देखब नागर के ?

राति दुपहर के ॥ धुन ॥

बिनूँ माधव मिलन, आवे ने रहे जीवन,
मदन दहन फूल शर के,
राति दुपहर के ॥ धुन ॥
द्विज भवप्रीता भने मोर हृदि वृन्दावनें
रास लीला राधा राधा वर के।
राति दुपहर के ॥ धुन ॥

———∘———

(৪৮) ঝুলনের (झूलन पाला) बंगला मिश्रित
— त्रिपदी —

आहा ! कि माधुरी श्रावन शर्वरी
ताहे शुक्ला एकादशी।
कुंज मध्यस्थले, नीप डाले दोले
श्याम कोले राय रूपसी।
सखिरा दोलाय, चामर डुलाय
मुखे गाय प्रेम गीति।
युगल मूरति हेरी सह रति,
रतिपतिर अधोगति ।
झलकत मरकत, दुह जन अंग,
जड़ित इन्द्र नील हिरक संग।



रूप द्युति चमकत, मंजुज कुंज
गुंजत भ्रमर चुमि फूल पुंज
पियु-पियु कुंजत पपीह विहंग ।
उथलत मन्मथ सिन्धु तरंग

————

(৪৯) ঝুলনের (झूलन)

आकाशें वारि पतन, कुंजे प्रेम वरिपन
सखि ! रसीक रंगीया।
बांशुरी जार अधर संगीया रे सखि !
॥ धुन ॥ रसीक रंगीया ॥
राधा सगें दोले त्रिभंगीया रे सखी !
रसीक रंगीया ॥
आकाशे मेघ गर्जन, कुंजे मूरली गुंजन
सखि ! रसीक रंगीया।
अपरूप शोभार भंगीया रे सखी ! ॥ धुन ॥
आहा ! कि शोभा निरखी गिरि शृंगें नाचे शिखी
सखि ! रसीक रंगीया ।
कुंजें नाचे गोपी विहगीया रे सखि ॥ धुन ॥

मेघ कोले सोदामिनी, श्याम वक्षे विनोदिनी
सखि ! रसीक रंगीया ।
रहे परस्पर आलिंगिया रे सखि ! ॥ धुन ॥
चारि चरण कमले, मधु लूटे कुतूहले
सखि ! रसीक रंगीया ।
"भवप्रीतार" से मन त्रिगिया रे सखी ॥ धुन ॥

(८०) झूलन (झूलन)

राधा संगें झूले श्याम रूपें हारे रति काम
लागे झूला निकुंज भीतर में—
॥ धुन ॥ मूरली अधर में ॥
झूलावे ब्रज सुन्दरी, ढुलावे चौंवरा धरी,
कंगना झंकारे हाथा पर में,
बिजुली नजर में ॥ धुन ॥
डारी नाचे मौरी मौरा, फूल में गुंजरे भौंरा,
मधु झरे पपीहा के स्वर में
कोकिला कुहर में ॥ धुन ॥
युगल रूप माधुरी, हेरी के नयना भरी,
भवप्रीता आनन्द अन्तर में,
खसे पैरों पर में ॥ धुन ॥



(८१) झूलन (झूलन)

सावन निशि विमला, वृन्दावने प्रेम लीला
झुलावये जते गोपी कुल,
॥ धुन ॥ दोले राधा श्याम प्रेमाकुल ॥
यमुना पवनान्दोले, दोले तरंग हिल्लोले
डाले दोले मयुरा मंजुल ॥ धुन ॥
मेघेते बिजुला दोले, पुष्पलता तरू कोले
दोले रे; भ्रमर धरी फूल ॥ धुन ॥
"भवप्रीता"॥ हृद् कमले, किशोर किशोरी दोले
बहे प्रेमा-नील-अनुकूल ॥ धुन ॥

---

(८२) झूलन (राधाक विरह वर्णन)

सुनिया सघन मुरली तान हरि प्रेमाकुल भेल पराण
बिसरल सुधि घर के ।
बिनू श्री श्याम दहत काम बरषा फूल शर के
॥ धुन ॥ बाजत घन बंशी, बंशीधर के
नागर के, नटवर के, गिरिधर के ॥
बरषे भयान भादव राति, सघन चमके बिजूली बाति
गरजन जलधर के ।

विनूँ गोविन्द नाहिक निन्द,
सेज सम विषधर के ॥ धुन ॥
लइया मालती मधुर गंध, वहत पवन मन्द-मन्द,
गुँजन मधुकर के।
दारूण पपीहा रटे पिया-पिया
उरसे पीर जहर के ॥ धुन ॥
सारस करत सरस गान; प्रेम रस विनु तरसे प्राण,
सुरति रसिक वर के।
भवप्रीता मन चंचरीक् येन
कमल पद सुन्दर के ॥ धुन ॥

(८३) झूमर (भदवारी)

॥ धुन ॥ भादव अंधारि भयंकर, राति लागे डर।
वदरा गरजै घोर मोरा बोले कठोर,
झूप धारें झरै जलधर
राति लागै डर ॥ धुन ॥
निकुंजें नाही नागर मदनें हानत शर
दंशे विरह विषधर
राति लागे डर ॥ धुन ॥



मोही वियोगिनी पावी, देखावे संयोग छवी,
फूले बैठी निलज भ्रमर
राति लागे डर ॥ धुन ॥
पीऊ कहाँ कही-कही उपहास करे मोही,
निदारूण पपीहा पामर
राति लागे डर ॥ धुन ॥
भवप्रीता क हृद कमलें खेलें सदा कुतूहलें
राधा संगें राधा मनोहर
राति लागे डर ॥ धुन ॥



(८४) झूमर (बेल पत्र के प्रति)

हरीहर गाछें मौरा, हरीहर अंगिया,
हरीहर शोभे सुगिया विहंगिया गो। हरिहर......
हरीहरे नील मेघ तरंगिया गो॥
हरीहर तीरें पीये, हरीहर भंगिया।
हरीहर रंगें मन गेल रंगीया गो॥ धुन॥
हरीहर प्रेमे मन उमंगिया
हरीहर बेलपत्र तोड़े सभे संगिया।

नहीं डरे हेरी बाघिनी भुजंगिया गो
बनी गेले सभे नन्दी भिरिंगिया गो ॥ 'बनि' गेले...
भवप्रीताक हृदि बीचें उमा अरधंगिया
नाचे भोला जटाँ उमड़ये गंगिया गो ॥ नाचे...

---

(८८) झूमर (राधाक विरह वर्णन)

सुनिया सघन मुरली तान हरि प्रेमाकुल भेल पराण
विसरल सुधि घर के ॥
विनूँ श्रीश्याम दहत काम बरषा फूल शरके
॥ धुन ॥ बाजत घन बंशी, बंशीधर के
नागर के, नटवर के, गिरिधर के ॥
बरषे भयान भादव राति सघन चमके बिजूली बाति
गरजन जल – धर के।
बिनूँ गोविन्द नाहिक निन्द,
सेजसम विषधर के ॥ धुन ॥
लइया मालती मधुर गंध, बहत पवन मन्द-मन्द
गुँजन मधुकर के ।
दारूण पपीहा रटे पिया-पिया



उरसे पीर जहर के ॥ धुन ॥
सारस करत सरस गान, प्रेम रस बिनु तरसे प्राण
सुरति रसिक वर के।
भवप्रीता मन चचरीक् जेन
कमल-पद सुन्दर के ॥ धुन ॥




---

(८६) झूमर (भादुरिया)

भादव घोर रजनी, हमें कुंजें एकाकिनी हे,
मधुर मधुर सुरें बाजे बांसिया
॥ धुन ॥ सखि ! साले मोर हीया ॥ मधुर......
मेघा घन गरजे रिमि झिमि बरषये हे,
कोकिला के कुहुस्वरें जारे अँगिया ॥ धुन ॥
केतकी सौरभ बाण, मदने साधे निशान हे,
पीऊ पीऊ रटे राति पापी पपीहा ॥ धुन ॥
द्विज भवप्रीता भने माधव अन्तिम खने हे,
उबारीहा भौ सागरें दीने करी दया ॥ धुन ॥

---

(८७) झूमर (भादुरिया)

बरषे भादव राति दिशि ने सुझाय
॥ धुन ॥ बिनूँ बन्धुआ रे सखी ! चित अकुलाय ।
बिजुली छटकै छने मेघ गरजाय
आधि रतिया रे सखी ! मदन सताय ॥ धुन ॥
मौरा कुहक सुनी अबला डराय,
कारी कोलिया रे सखी ! जीहा जराय ॥ धुन ॥
गमके मालती फूला बहे पूरबाय
फूल सेजिया रे सखी ! मोहि ने सहाय ॥ धुन ॥
भवप्रीता राधाकृष्ण चरण धेयाय
युगल छविया रे सखी ! झलके हियाय ॥ धुन ॥

---

(८८) झूमर (भादुरिया) छन्द मिश्रित

— अभिसार वर्णन —

छन्द

बिरहिनी नारी उमर किशोरी
भादव राति अंधारी (हो)
भादव राति अंधारी
निन्दो ने आवे मदन सतावे



तापर आफत भारी (हो)
तापर आपत भारी ।

(भादुरिया) झूमर

बाजे मोहन बँसुरिया भिजी चुनरी ।
गोरी बरषे बदरिया भिंजी चुनरी ॥ धुन ॥

(छन्द)

सुनिके बांसुरी मति भई बावरी,
चित बसी गये मुरारी (हो)
चित बसी गये मुरारी ।
चलूँ वही वन, जहां मन मोहन
श्याम बँसुरिया धारी [हो]
श्याम बँसुरिया धारी ।

(भादुरिया) झूमर

मोहि ने सुझे डगरिया भिजि चुनरी ॥
नैना झरे जैसे झरिया भिजि......

(छन्द)

मलका मलके बटिया झलके
फिर तो वही अंधारी (हो)

फिर तो वही अंधारी ।
चरण चलेना रहत बनेना ।
त्रिशंकु दशा हमारी (हो)
त्रिशंकु दशा हमारी ।

( भादुरीया ) झूमर

डर लागे एसकरीया सुधि बिसरी
शांकरी कुंज गलीया भिजि चुनरी ॥
नैना झरे जैसेँ झरिया भिजि चुनरी

( छन्द )

राति बीच मग ठाढ़ी अचल पग
श्री वृष भानू दुलारी [हो]
श्री वृष भानू दुजारी ।
भवप्रीता चित राधा संग नित
खेलैं रास विहारी [हो]
खेलैं रास विहारी ।

( भादुरीया ) झूमर

जैसेँ बादल बिजुरिया युगल जोरी ॥
॥ धुन ॥ नैना झरे जैसेँ झरिया भिजि चुनरी



(८६) झूमर (भदवारी)

सुनीके मूरली ध्वनि, निन्दा से जागी तखनी ।
अखिया मेंढ़े तें धनी धाय जहां श्याम राय,
॥ धुन ॥ कुंजे पैसी मूरली बजाय जहां श्याम...
कामिनी यामिनी जोगें जाय जहां श्याम राय,
कुंजें पैसी मूरली बजाय ॥
भादव राति अंधारी, सूपें धारें झरे झरी,
बिजुलिया आंखि झलसाय, जहां श्याम राय ॥कुंजे...
झींगुरां करे अनोर, मौरा बोले कठोर,
सेही शुनी जीहा जे डराय, जहां श्याम राय ॥
कुंजे पैसी.........
फूल बाणें उड़ी जाय, भवप्रीतानन्द गाय,
अन्तरें युगल छवि छाय, नहां श्याम राय ॥ कुंजे पैसी...

---

(६०) झूमर (राधाक रूप वर्णन)

तोर मुख हेरी टूटे शशी के गुमान
बिहुसावे सजनि दिये जैसे पीरिति के शान ।
तोहरो भौंवा धनी ! धनुका समान ।

मारि देली सजनि हृदये नयना के बाण ॥ मारि...
यौवना कमल कली चितें अनुमान ।
सेहो देखी सजनी ललचये रसिक पराण ॥ सेहो...
तोहरो रूपें हराबल जे गेयान
दीन राति सजनी भवप्रीताक् हरि पदे ध्यान ॥

---

(६१) झूमर

नामी तोर केशिया तरूण वयसिया
दाँति शोभे रे उरेखल मिशिया (दाँति शोभे)
दुयोरे यौवना जैसें मदन कलशीया
सेहो देखी मोरमन गेले रसिया (सेहो देखी)
तोरो रूपे झलकये चहूं दिशिया ।
बोले धनी मुखें हँसी रे बिहुसिया (बोले धनी)
भवप्रीता कहे प्रेमे सु निले रूपसिया
जुगल बिनूं चित हमरो उदसिया तोरा बिनूं)

(६२) झूमर (भादुरिया)

झलके बिजुली रे गरजे घनघोर ।
रे गरजे घनघोर ।
॥ धुन ॥ राति कुंजें एकेली रे, तड़पे जीहा मोर ।



पापि रे पपिहा पिया पिया करे शोर
पिया पिया करे शोर ।
आधि राति बिंधये तीरें मदन कठोर ॥ आधि...
झींगुर दादुर बोले कुहूकत मोर
बनें कुहूकत मोर ।
सुनी कोयली के शोर रे, बाढ़े बिरह घोर ॥
बून्दा टपके दिये पवन झीकोर
सखी, पवन झीकोर ।
भवप्रीता श्री राधा श्याम भावे जे बिभोर ॥

(६३) झूमर दांड़ झूमरा (भादुरिया)

चाननी सोहान राति, मगन चकोर गे सजनी
॥ धुन ॥ सजन चकेवा चकेवी दुखि आंखिया लोर ।
चंदना के डारी कोयली पपीहा के शोर गे सजनी,
सजन, कदमाके डारीं चढ़ि नाचे जे मोर ॥ धुन ॥
आधि राति मारे तीरें, मदन कठोर गे सजनी,
सजन, दगधे विरह आगि जिहा जे मोर ॥ धुन ॥
भवप्रीताक् मन कुंजें, लागे प्रेम डोर गे सजनी,
सजन, तहमाँ जे निते दोले किशोरी किशोर गे सजनि ॥धुन॥

(६७) झूमर (भादुरिया) भादव रातिक् वर्णन

राति अंधारी बने, जूगूनू झलकनमा कि
वन देवी ।
पिन्हें रतन गहनमा कि
वन देवी । पिन्हे......
नाचे देवी गावे गीता कोकिल कुजनमा कि
पइयां बाजे । १
पायल झींगुरा गुंजनमा कि
पइयां बाजे ।। पायल...
संगें यमुना नाचे कल्लोल कीर्त्तनमा कि
पूछ दये हूके
मौरा मगनमा कि
पूछ दये हूँके । मौरा......
मृदंगादि बाजा बाजे, दादुर रटनमा कि
भवप्रीता ।
भावे हरि के चरणमा कि
भवप्रीता ।

---



(६८) झूमर (हिन्दी)

श्याम चले राधा के पास
डिमिक डिमिक डमरू के ताल
बम बम बम बम बाजे गाल ।। श्याम......
हो राधा जी ! छोड़ो मान
यही सींघा में देता तान
माफ करो अब मेरा दोष
दास समझ कर छाड़ो रोष ।। माफ...
इसी तरह चलते घनश्याम ।
जा पहुँचे राधा के धाम ।
जहाँ प्यारी सखीयन के साथ
करती थी माधव की बात ।। जहाँ...
देख कर नवीन योगी राज
चौंक पड़ी सखीयन समाज ।
उसी तरफ सब देती ध्यान ।
भवप्रीता के हरि गुण गान ।। उसी...

---

श्री कृष्ण मथुरा गमन

(६६) झूमर (भादुरिया)

( छन्द )

अक्रूर के रथे हरि जब बैठल जाय।
गोपी संगे दौड़ी राधा कहे अगुआय

झूमर

राधा कहे घाट रोकी यहीं रह कमल आंखो
॥ धुन ॥ श्याम ! ने जाह मथुरा ॥
गोपी होते विरह विधुरा
हे श्याम ! ने जाह मथुरा ॥
आंखियां रहतें अन्ध, होयते जसोदा नन्द
श्याम ! ने जाह मथुरा।
के सुनाते बंशीया के सुरा हे श्याम
ने जाह मथुरा ॥ धुन ॥
सभे गोपी आंखी लोरें, जमुना बहते जोरें,
श्याम, ने जाह मथुरा।
काद होते गोकुला के धूरा हे श्याम !
ने जाह मथुरा ॥ धुन ॥
भवप्रीताक् हृदि वासें, दुइयो रही खेल रासें



श्याम, ने जाह मथुरा।
ई वासना ने राख अधूरा हे श्याम !
ने जाह मथुरा ॥ धुन ॥

---

(६७) झूमर (भादुरिया) राधाक् विरह वर्णन

किछु ने राखल बांकी, तेजी गेल कमल आंखी
एका राखी, भांगी प्रेम पिंजड़ा उड़ल पाखी।
॥ धन ॥ सुन प्राण सखी !
भादरा बादरा जोखें झरे आंखि ॥
मेघा वरषे डाकी, राति बीते जागि-जागि
एका थाकी,
व्याकुल पराण से बंधुआ लागि ॥ धुन ॥
जलद् लीला निरखी, शिखनी सहित सुखी
नाचे शिखी,
कामे मारत बाण बिषे माखि ॥ धुन ॥
हरिक् रूप चिते राखी, भवप्रीतां कहे हांकी
सदा देखी;
युगल मूरतिया मरमें आंकि
सदा देखी ॥ धुन ॥

(६८) झूम्मर (भदवारी)

तेजले मोहन मन भेले दुनमुन रे ।
उड़ी गेले शुगना पिंजड़ा भेले शून रे ॥ उड़ी गेले...
माधो के विरह उधो ! अन्तरे कठीन रे !
रावण के चिता जोखें धिधके आगिन रे ॥ रावण...
श्यांम बिना तड़पये जीहा निशि दिन रे ।
तड़पे मछुली जैसेँ, भये पानीस् भीन रे ॥ तड़पे...
राधा माधव चारी, चरण नलीन रे ।
भवप्रीताक् मन भौंरा तहिमेजे लीन रे ॥ भवप्रीताक् ..

---

(६९) झूम्मर (भादुरिया) राधाक् विरह वर्णन

माधव लये अक्रूर चली गेला मधुपुर,
सुन करी एहो नन्द ग्राम सखी ।
सुन करी एहो नन्द ग्राम ।
॥ धुन ॥ हाय रे ! करम भेले वाम ॥
गोकुला भेले अंधार, प्राण करे हाहाकार
आवे ने राखवें जीहा हाम सखो !
आवें ने राखवे जीहा हाम ॥ धुन ॥



पंछी जों रहेतलों, उड़ी पिया मिले तलों,
नारी सें ने बने एको काम सखी
नारी सें ने बने एको काम ॥ धुन ॥
भवप्रीताक चित माझे प्रेम के रास विराजे
तहाँ नितें खेले राधा श्याम सखी
तहाँ नित खेले राधा श्याम ॥ धुन ॥

---

(७०) झूम्मर (भादुरिया)

जेही दिन गेला श्याम, विधि मोही भेल वाम
सखी ! सभे सुन भेले ।
॥ धुन ॥ गोविन्दे गोकुला तेजी गेले रे सखी ।
सभे सुन भेले ॥
दिने जे लागे अंधार, वरषे जलद धार .
सखी ! सभे सुन भेले ।
राधा मन सुन करी देले रे सखी !
सभे सुन भेले ॥ धुन ॥
बदरा वरषे जैसेँ, दुयो आंखि झरे तैसेँ
सखी ! सभे सुन भेले ।

तयो हिया आगि ने मिझाले रे सखी ।

सभे सुन भेले ॥ धुन ॥

भवप्रीता कहे तबे जों सुनें भेले सभे,

सखी ! सभे सुन भेले ।

प्राणं काहे देहा में रहले रे सखी !

सभे सुन भेले ॥ धुन ॥

(७१) झूम्मर (भादुरिया) राधाक विरह वर्णन

ऐसन निंदिया में अगिया लागी जाय

हे अगिया लागी जाय ।

कौनें मोर कन्हैया लाल ले गेली चोराय ॥

एते रे, जानेतों निल मणि चोरी जाय

निल मणि चोरी जाय ।

गांथीं मोती के हारें गरें देतों लटकाय ॥ २ ॥

जागि रे, सगरो निशी, राखेतों जोगाय

सखी ! राखेतों जोगाय ।

भोर भोरें भौंवरा देतों कमले लगाय ॥ धुन ॥

प्रातें, मदन जाला सहलो ने जाय

सखी ! सहलो ने जाय ।

भवप्रीता कहथी राधा गेली घबराय ॥ धुन ॥



(७२) झूम्मर (भदवारी)

गरजे बदरा घोर, हिया मारे शैल गो

असमये,

मोरे पिया तेजी गेल गो,

असमये......॥

सांचलो यौवना मोर, विफले गेल गो,

गुणी-गुणी हियरा झांझर भेल गो,

गुणी गुणी......॥

राति हेरी मने पड़े, सुख राति खेल गो

फूल शरें

कामे विकलिया देल गो,

फूल शरें......॥

कैसें काटबे राति, कुंजें एकेल गो

भवप्रीता ।

हरि पदें मजी गेल गो

भवप्रीता......

—•—

(७३) झूम्मर (भादुरिया)

। तेजी गेला यदुपनिया
गे सजनि ! सजन
तब सहीं दिने लागे यहां घोर रतिया ।
गे सजनि ! सजन ॥
कैसें भूलव हम माधव पीरितिया
गे सजनि, सजन !
हियरां समाये गेले श्यामली सुरतिया
गे सजनी......
लोरा कजरा कारी कानी नखा सतिया
गे सजनि ! सजन ॥
लिखबे अंचरा चीरी पिया प्रेम पतिया
गे सजनी, सजन !......
ने सुहावे धन जन जीवन धरतिया
गे सजनी सजन
भवप्रीता हृदे साजे युगल मूरतिया
गे सजनी ! सजन ॥
भवप्रीता......



(७४) झूम्मर (भादुरिया)

॥ धुन ॥ कोयलिया ! यहाँ काहे राति करे शोर ?
कोयलिया......॥
यहाँ जे विधुराबाला बहावये लोर ।
कोयलिया विरह अगिनि चहूंओर ॥ धुन ॥
मथुरा में बोलें जहाँ कालिया किशोर
कोयलिया ! कुबजी से करये किलोर ॥ धुन ॥
केली कुंजें बासा बांधी करिहें अनोर
कोयलिया ! जहाँ बंशी टेरे मन चोर ॥ धुन ॥
लेले जाहीं मोरा भौंरा मलया झीकोर
कोयलिया ! भवप्रीता युगल भावे भोर ॥धुन॥

---

(७५) झूम्मर (भादुरिया)

॥ धुन ॥ जब से तेजला वृन्दावन नील माधव
तब से मलीन भैले मन ।
पीरिति जोरी के हरि, तेजी गेला मधुपुरी,
तहाँ जाये कुबजी मिलन ॥ धुन ॥
सुन लागे घाट बाट, सुन नन्दक् राजपाट
सुन लागे श्रीरास भवन ॥ धुन ॥

निन्दा भूखा सभे गेल, हियरा भांभरी भेल
आधि राति दग्धे मदन ॥ धुन ॥
भवप्रीतां भावे मन राधा माधव चरण
शमन दमन निरंजन ॥ धुन ॥

---

(७६) भूमर

॥ धुन ॥ अँखियां निन्दो नाही अखियां निन्दो नाहीं
अँखिया निन्दो नाहीं ।
के आनते श्यामक् धरी बांहीं,
अँखियां निन्दो नाहीं ॥
भादो राति भयंकर एकसरी लागे डर
अँखिया निन्दों नाहीं ।
ने आले नागर कुंज माहीं ॥ धुन ॥ अंखीय ...
जेही कुंजें चन्दा रानी, बैठली साजी मोहिनी
अखियां निन्दो नाहीं ।
मोहन रहला राति बांही ॥ धुन ॥ अंखीया निन्दो...
विरहे वेकल प्राण, मदने हानत बाण
अँखियां निन्दो नाहीं ।
सेजा जैसन बरकले लाही ॥ धुन ॥



भवप्रीताक् श्रीनिवास ! अन्ते दिहा चिर वास
अंखिया निन्दो नाहीं ।
राधा संगे जहों तोहें ताहीं ॥ धुन ॥ अंखीया...

---

(७७) भूमर (गोपिनीक बिरह बर्णन)

॥ धुन ॥ कलपी कलपी फाटे हिया
तेजी गेला माधव पिया ॥
कलपी कलपी फाटे हिया तेजि गेल माधव पिया
कही गेल दश दिन, वितल बरष दिन
तयो ने आवले कपटिया ॥ धुन ॥ तेजि...
जाति देलों कुल देलों, अपन पर सभीस गेलों,
कान्दी कान्दी ने सुभे अँखिया ॥ धुन ॥ तेजि...
आँख गेल समांग गेल, गतर विलाये गेल,
भावी गुणी भाभर देहिया ॥ धुन ॥
कांदी कहे राधा रानी, कुबजी भेले बेरिणी
*भवप्रीता* भावे त्रिभंगिया ॥ धुन ॥ तेजि...

---

(७८) झूमर

चंचल चित हमार, जैसे बिनु खेपनिहार

दूती ! ने आले कन्हैया ।

डगमग करे नदी नैया रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥

॥ धुन ॥ आबी गेले बरषा मदैया रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥

बाहर भीतर आर, करे प्राण बारम्बार

दूती ! ने आले कन्हैया ।

ठीके जैसें बिजुली झलैया रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥ धुन ॥

बदरा बरषे जैसें, दुयो आँखि झरे तैसें

दूती ! ने आले कन्हैया ।

मारे तीरें मदन मुदैयां रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥ धुन ॥

भवप्रीता के चितें श्याम, जैसें राधाक् लये बाम

दूती ! ने आले कन्हैया ।

देखा दिहा आखिरी समैया रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥ धुन ॥



(८०) झूमर (भादुरिया)

॥धुन॥ उधो, कि कहब तोरा, चित चोराय भागल चित चोरा

हे उधो ! कि कहब तोरा ।?

दे गेला दारूण दुख मोरा।

हे उधो ! कि कहब तोरा ॥

हमरा बिसारी हरि, अब जाये मधुपुरी

उधो ! कि कहब तोरा ।

कुबजी से करत किलोरा

हे उधो ! कि कहब तोरा ॥ धुन ॥ दे गेला...

सुन करल बृन्दावन, सुन राधा के जीवन

उधो ! कि कहब तोरा ।

सुन करल जसोदा के कोरा

हे उधो ! कि कहब तोरा ॥ धुन ॥

यहाँ सभे सुखी गेल, जमुना में बाढ़ भेल ।

उधो कि कहब तोरा

पाये नित गोपी आँखिक् लोरा

हे उधो ! कि कहब तोरा ॥ धुन ॥

डारे ने नाचत मोरा, फूले ने बैठत भौंरा

उधो ! कि कहब तोरा ।

ने सुनाबे मुरली के सोरा
हे उधो ! कि कहब तोरा ॥ धुन ॥
भवप्रीता हृदि मांझ, सदा करत विराज
उधो ! कि कहब तोरा
राधा संगें श्रीनन्द किशोरा
हे उधो ! कि कहब तोरा ॥ धुन ॥

(७९) झूमर (भादुरिया) उद्धव के प्रति राधाक उक्ति

॥ धुन ॥ उधो हमरे अभाग, उधो हमरे अभाग
उधो हमरे अभाग ।
हुनको ने दोष ने हुनका सती राग
उधो हमरे अभाग ॥
जबलें लीलारें छले माधब सोहाग
तबले सेबलों हरि, करि सभे त्याग ॥ धुन ॥
मोही तेजी कुबजी से नव अनुराग,
देलथीं दरपणियां में हीरवा के दाग ॥ धुन ॥
जबलें जीयबे सुख भोग सें विराग,
राखबे चरणमा में मतिया सजाग ॥ धुन ॥
भवप्रीताक् दहे प्रभु ! विषवा के आग,
देहो नाथी विषय वासना रूपि नाग ॥ धुन ॥



(८०) झूमर (भादुरिया)

जोड़लों पीरिति तोरी, हमरा बिसारी हरि,
॥ धुन ॥ चली भेला मथुरा नगर में,
कुबजी के घर में ॥ चली भेला......
आवल बरषा ऋतु, भांगल धैरज सेतू,
भसावल विरह सागर में ।
जलन्ते जहर में ॥
भसावल......
वारिधारा, रूपें काम, बरपे शर अविराम,
अबला कि टिके इ समर में ।
पति नाहीं घर में ॥
अबला कि......॥ धुन ॥
(हरि) सभी के जे उबारिहा, भवप्रीताक् डुबाय दिहा,
एक रस चैतन्य सागर में ।
अनादि ईश्वर में ।
एकरस......
[ फेरू ने जठर में ] ॥ धुन ॥

——०——

(८१) झूम्मर (भादुरिया)

यहाँ विना मधु रिपु, मधु ऋतु जारे वपू,
कोकिल काहे कुहू के ?
के वैरिणी मोहले बंधु के
रे कोकिल !
काहे कुहूके ?
|| धुन || तोर बोली चुभे शेल बुके
रे कोकिल !
काहे कुहूके ||
हम विधुरा रमणि जारे विरह आगिनि
कोकिल काहे कुहू के ?
मलया बतासे आगिन हुके
रे कोकिल ।
काहे कुहूके || धुन ||
अमाके मंजरी वाण, मदन साधे निशान,
कोकिल काहे कुहूके ?
टानी निज फूल के धनु के
रे कोकिल ।
काहे कुहूके ? || धुन ||



भौंरा के गुंजन गान, पपिहा के पिया तान,
कोकिल काहे कुहूके ?
कमल सौरभें नागें फूके
रे कोकिल !
काहे कुहूके ? || धुन ||
भवप्रीताक् अन्तें हरि, जम भय से उबारि,
कोकिल, काहे कुहूके ?
राखी लिहा, आपन मूलूके
हे हरि !
कोकिल कुहूके ! || धुन ||

---

(८२) झूम्मर (भादुरिया)

अक्रूरजे क्रूर भेल, हरी हरि लये गेल
सखि ! नन्दके नन्दन ।
|| धुन || बांधी गेला पीरिति बन्धन रे सखि !
नन्दके नन्दन ।
गोकुला में उठाले क्रन्दन रे सखि !
नन्दके नन्दन || धुन ||

शुन्य हृदय मंडल, लहरे विरहा नल

सखि ! नन्दके नन्दन ।

जोरें जरे जीवन इन्धन रे सखि !

नन्दके नन्दन ॥ धुन ॥

हमरा जोगिनी करि, देलथीं भसम झोरी,

सखि ! नन्दके नन्दन ।

कुबजी के आदर चन्दन रे सखि ।

नन्दके नन्दन ॥ धुन ॥

भवप्रीता प्रेम भरी, राधा कृष्ण ध्यान धरी,

सखि ! नन्दके नन्दन !

करे नित्य चरण वन्दन रे सखि !

नन्दके नन्दन ॥ धुन ॥

---



(८३) झूम्मर (भादवारी)

फेकी विरह सागरें, रहला श्याम मधुपुरें

(राम) श्यामली सुरतिया ।

तयो ने टूटे मोर पीरितिया हो राम !

॥ धुन ॥ श्यामली सुरतिया ॥ तयो ने...

भूलली ने जाय से मूरतिया हो राम !

श्यामली सुरतिया ॥

पहले जतन करि, बंशी में सनेही भरी

राम ! श्यामली सुरतिया ।

प्रेम जोड़ल छल मतिया हो राम ।

श्यामली सुरतिया ॥ प्रेम......

राति मेघा अंधारी, गरजे बरषे भारी

राम ! श्यामली सुरतिया ।

मलका मलके कापें छतिया हो राम !

श्यामली सुरतिया ॥ मलका...

एकेलि डरत प्राण, कामे मारे फूल बाण,

राम ! श्यामली सुरतिया ।

भवप्रीताक हरि पदें गतिया हो राम !

श्यामली सुरतिया ॥ भवप्रीताक् ...

(८४) झूमर (भादवारी)

जों जों गरजये कारि रे बदरिया

रे सजनी !

॥ धुन ॥ तों तों बेयाकुल प्राण रे सजनी ॥

जैसें-जैसे चमकये सोना के बिजुलिया

रे सजनी !

छट छट लागे फूल वाण रे सजनी ॥ छट...

जारे यौवन वन विरह के अगिया

रे सजनी !

बेपछ भयला भगवान रे सजनी ॥ बेपछ...

*भवप्रीता* कहे हरि, अन्तर बिहरिया

रे सजनी !

तयो काटे विरह भयान रे सजनी ॥ धुन ॥

---

(८५) झूमर (भादवारी)

नदी उमड़लो वान, खेते हरिहर धान,

॥ धुन ॥ देखतें भदरा सोहान गे दूति !

कोकिला के कुहू गान, पपिहा के मीठी तान,

बदरा घेरल आसमान गे दूति ! देखतें...

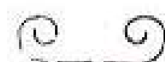


आजूने आवला श्याम, बिधि होवल वाम,

मदने हानत हिया वाण गे दूति ॥ मदने...

कालिया कठोर रीति, देखि तड़पये छाती

भवप्रीताक् ने छुटे धेयान गे दूति ॥ धुन ॥



(८६) झूमर (भदवारी)

वनके सहेलिया रे, कारी कोयलिया !

॥ धुन ॥ कोयलिया, आधि राति काहे करे शोर ॥

पिया परदेशिया कि तोहरो रूपसिया ?

रूपसिया, जारे कि विरह दुख घोर ॥ धुन ॥

साथें तोर पखीया रे, तयो काहे दुखिया ?

रे दुखिया, पीउ जाह निज पिया ठोर ॥ धुन ॥

*भवप्रीताक* गतिया कि तोहीं श्री पतिया,

श्रीपतिया तोरे श्री चरणे गति मोर ॥

(८७) झूम्मर (भदवारी)

जहाँ बिरिहिनि वाला, एका कुंजें सहे जाला
तहाँ काहे, तहाँ काहे, बोले कोकिल
राति मझारि कि तहाँ काहे ? ॥

जहां जाये रस राज, कुबजी सें भोगे राज
तहाँ जाये, तहाँ जाये रे कोकिल !
बोलें जीहा भरी कि तहाँ जाये ॥

मधु अलि संगे करि, जाह कोकिल मधुपुरी
केलि बनें, केलि बने रे जहाँ,
विहरे विहारी कि केलि बनें ॥

भवप्रीता करे मन, सिरें धरी राधा धन
तहाँ जाये, तहाँ जाये रे कोकिल !
मिलावे मुरारी कि तहां जाये ॥

भवप्रीताक् साध भारि, कुबजी सें छिनी हरि
आनी व्रजें, आनि व्रजे रे कोकिल !
मिलावे किशोरी कि आनि व्रजे ॥ धुन ॥



(८८) झूम्मर ( गणेश वन्दना )



भादव मास आवल हरीहर धरातल
उमड़ये नदी दूती ! उमड़ये नदी ।
मुसां रथें उतरला गणेश धरती
दूती सुन्दर मूरति ।
॥ धुन ॥ तरूण अरूण छवि सिन्दुरा के ज्योति
दूती ! सुन्दर मूरति ॥

गजेन्द्र मुख सुन्दर एकदन्त लम्बोदर
भालें निशापति ।
दूती ! भालें निशापति ॥२॥

शिरें सिन्दुर शोभे लाल चादर धोती
दूती ! सुन्दर मूरति ॥ धुन ॥

चारि हाथें चमत्कार पाशांकुश कुम्भ आर
दन्त शोभा अति,
रतन मुकुता हार गलें गज मोती
दूती ! सुन्दर मूरति ॥ धुन ॥

परमानन्दे मगन, ढुलू ढुलू त्रिनयन
कमलें बसति !
दूती ! कमलें बसति !
दुहू गालें झरे मद भौंरा खेले माति
दूती ! सुन्दर मूरति ॥ धुन ॥
अग्रपूजा त्रिभुवने भवप्रीता श्री चरणे
करये प्रणति दूती ! करये प्रणति ।
विनायक विघ्न हर देह शुभ मति
दूती ! सुन्दर मूरति ॥ धुन ॥

---

(८९) झूमर (भदवारी) गणेश बन्दना

॥ धुन ॥ सभे देखाय जैसन लाल, सभे देखाय जेसन लाल,
लाले लाल बनी आयला गौरी के लाल ॥
गणेश जी के-देहा लाल, माला चन्दन लाल,
लाले कमलें बैठल चरण सोभे लाल ॥ धुन ॥
भांग पीके ऑखि लाल, सिरें सिन्दूर लाल,
गलां माणिक लाल धोती चादर लाल ॥ धुन ॥
अकाशें अरूण लाल, छटा से जगत लाल,



गालें कनेल जबा लाल पानीम् कमल लाल ॥ धुन ॥
भवप्रीताक् हृद कमल लाल, तापर दुर्गा पद लाल,
लाले लाल हेरी भागे काला बरण काल ॥ धुन ॥

---

(९०) झूमर (गणेश रूप वर्णन)

गज मुंह की सुन्दर, सिन्दुर कपार पर
दाड़ाँ पर सोभे लाल धोतिया
हो, जय देव गणपतिया ॥
॥ धुन ॥ लाले लाल सुन्दर मूरतिया हो,
जयदेव गणपतिया ॥
लीलारें जे उगे चाँद, लाल चादर भरी कान्ध
चारि भूज गले गज मोतिया हो ॥ धुन ॥
भांग पीकें राति दिन ढुलू-ढुलू ऑखिं तीन,
दाँति छीन भीन वैरिक् छतिया हो ॥ धुन ॥
भवप्रीता मांगे बर, दया कर लम्बोदर,
दूर कर विपद कुमतिया हो ॥ धुन ॥

---

## (९१) झूमर (गणेशक विसर्जन)

कैसें तोरा देव विसर्जन प्रभु गजानन
॥ धुन ॥ कैसें तोरा देव विसर्जन ॥

आवतहे भादव मासें, सभे मगन हुलासें
सभी मिली पूजलों चरण
प्रभु ! गजानन ॥ धुन ॥

गीत वाद्य नृत संगे, समय वितल रंगे,
दिन राति समान जैसन
प्रभु ! गजानन ॥ धुन ॥

तोहरो लगाये भोग, सभी करे छला भोग,
पूजा पाठ ब्राह्मण भोजन
प्रभु ! गजानन ॥ धुन ॥

आरती करेतें तोर, अंखिया से खसे लोर,
नहीं होवे मंत्र उच्चारण
प्रभु ! गजानन ।

भवप्रीताक् दया करि, आंश्विने आविह घुरि
माय संगें दिह दरशन ।
प्रभु ! गजानन ॥ धुन ॥



## (९२) झूमर

॥ धुन ॥ तोरा में अम्बिका आगमन हे आश्विन
तोरा में अम्बिका आगमन ॥

लवे पूजा सरंजाम, लेले आयल्हे मर्त धाम
बिछाल्हे हरित कुशासन हे आश्विन ॥ धुन ॥

आनल्हे निरमल जल, लब्वे सेफाली कमल
बाजनाले भौंरा के गुंजन हे आश्विन । धुन ॥

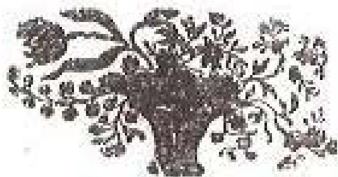
लवे केतारिके रस, नवीन फल गोरस,
धूपा शीत सुगंध पवन हे आश्विन ॥ धुन ॥

आरती ले दिन निशि निरमल रवि शशि,
कांश फूला चामर शोभन हे आश्विन ॥ धुन ॥

भवमीताक् निंद लेल्हे, नव जागरण देल्हे
पूजे लागी अभया चरण हे आश्विन ॥ धुन ॥

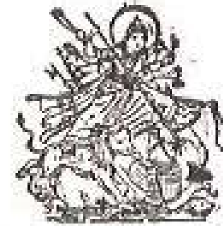
(९३) झूमर

आवे फुटलो कांश, आवलो आश्विन मांस,
वही गेलो शीतल बतास गे दूती !
वही गेलो......
दूर गेल मेघ घटा भकाराल चाँद छटा
आबे देवी पूजा के हुलाश गे दूती !
आवे देवी......
ऐसन सोहान दिन, पिया तेजी भेला भीन,
मने नहीं भावे गृह वास गे दूती !
मने नहीं......
"भवप्रीता" कहे गोरी आवे दुख थोरा थोरी,
कातिकें करीहा पियास् रास गे दूती !
कातिकें......





(९४) झूमर भगवती दुर्गा रूप वर्णन भादुरिया घाटवाली



चन्द्रवदनी गौरी, बरण जे सोना सरी
आरूपा-स्वरूप धरी ।
दश भुजा सिंघे असवारी
॥ धुन ॥ देलथीं असुरे मारी ॥
बरछी चलाये बुका फारी ।
देलथीं महीषे मारी ॥
देलथीं असुरे मारी देलथीं असुरे मारी
देलथीं महीषे मारी । बरछी ..
रतन झलके अँगें, गणेश कार्तिक संगे
सरस्वती लक्खी प्यारी ।
जया आर बिजया दुयो धारीं ॥ धुन ॥
*भवप्रीता* कर जोरी, चरणे मस्तक धरी,
कहत विनय करी ।
हेरू माता पलक उघारी ॥ धुन ॥



(९८) झूमर (भादुरिया)

शरत् के चांद हेरी मगन चकोर
सखि ! मगन चकोर ।
पिया नहीं गृह मोर, रे उमरिया जे थोर ।
पिया नहीं गृह मोर...॥२॥
कमलें गुंजरे भौंरा मधु रसें भोर
सखि ! मधु रसें भोर ।
दिये पवनें झिकोर रे, सिहरे अंग मोर ॥ २ ॥
फूल शरें विधे हिया मदन कठोर
सखि ! मदन कठोर ।
रे यौवना करे जोर, दु नयना बहे लोर ॥ २ ॥
कल ना पड़त सखि ! बिनू चित चोर
सखि ! बिनूं चित चोर ।
"भवप्रीता" कर जोर भावे कलिया किशोर ॥ २ ॥





(९९) मलहराई (ग्वाला समाज के लोक गीत)

उधो ! बड़ी भागी मिले निलमणियां रे ना,
उधो ! साधे लेलों पीरिति बन्धन नियारे ना ।२।
रामा रे, छीनी जे लेलके कुबजी रे सैतनिया
भला हो राम ।
रामा रे, छीनी जे लेलके...... . ॥१॥
उधो ! राति ने सोभे बिनूं चननिया रे ना,
उधो ! सोभये ने नदी, बिनूं पनियां रे ना ॥२॥
रामा रे, ने सोभये स्वामी बिनू तरूणिया
भला हो राम ॥
रामा रे ने सोभये.........
उधो ! नहीं जे रूचे भोजन पनिया रे ना,
उधो, राति नहीं आवे आँखि निंदिया रे ना ॥२॥
रामा रे, लोटे छयके सेजिया कारी रे,
नगिनिया भला हो राम ॥
रामा रे लोटे छयके.........॥३॥
उधो ! भवप्रीता, अधम परनिया रे ना,
उधो, ने करले पूनित करनिया रे ना

रामा रे, मांगे अन्ते हरि से पद तरणिया

भला हो राम ॥

रामा रे मांगें.........॥४॥

—०—

(६७) झूमर

॥ धुन ॥ मोहले भूवन दश चारि रे नारी !

तोर बलिहारी ॥

मोहनी के रूपें मात् बौरावला भोला नाथ

नारी तोर बलिहारी

गोपी प्रेमे जनमे मुरारी रे नारी ॥२॥

तोर बलिहारी ॥ धुन ॥

विधाता के मृगाकार, इन्द्र के आँखि हजार

नारी तोर बलिहारी ।

उजर चन्द्रमा बीचें कारी रे नारी ॥२॥

तोर बलिहारी ॥ धुन ॥

कते मुनिक तप नाश, कते शूरवीर दास

नारी तोर बलिहारी ।



सोना के गढ़ लंका देले जारी रे नारी

तोर बलिहारी ॥ धुन ॥

"भवप्रीता" कहे सार, तोहिं सृष्टि के आधार

नारी तोर बलिहारी ।

संसार मरू-भूमि के बारी रे नारी

तोर बलिहारी ॥ धुन ॥



(श्लोक) तारक मंत्र

वाराणस्यां पुरारिः परम करूणया

मोक्षदो विष्णुभक्तम् ।

गंगायां न्यस्तदेहं कथयति सततम्

ग्राहकर्णे किलेदम् ।

नेयं काशी न गंगा नच भवति हरिर्नैव

चत्वं न चाहम् ।

सर्वं चैतन्य मात्रं जगदिद मखिलम्

स्वप्न वच्चिद् बिवर्त्तः ॥

### श्री श्री काशी धाम महात्म्य

### तारक मंत्र ( त्रिपदी छन्द )

जेकरो कहूने गति, वाराणसी तेकर गति

जगत में धन्य काशी धाम ।

जहाँ बाबा विश्वनाथ, बसे अन्नपूर्णा साथ ।

जीवकं दियेल अनन्त विश्राम ॥

प्राणी करेल उद्धार, गंगा अर्द्ध चन्द्रकार

रूप धरी बहे अनिवार ।

ईजे आनन्द कानन, सदा शिव निकेतन,

यहे विश्वनाथ दरबार ॥

मरणी हारक गंगा तीरे, कहथीं कान के तरें

श्री तारक मंत्र मोक्षाधार ।

प्रभु दया के सागर; कान में भरती हर

ज्ञान उपदेश इ प्रकार ॥

---

### (६८) झूमर

ने काशी, ने गंगा हरि, ने तों, ने हम त्रिपुरारी

सर्व व्यापी चैतन्य एक सार

॥ धुन ॥ अनित्य असार ।



यहो विश्व माया के विकार

अनित्य असार ॥

जल आर बरफ जैसन, चैतन्य आर जग तैसन,

स्वपन रचित निराधार

अनित्य असार ॥ धुन ॥

शंकर मुखें विशेष, पाये, ज्ञान उपदेश,

धरे जीवें चैतन्य आकार

अनित्य असार ॥ धुन ॥

द्विज *भवप्रीता* भणे श्री शिव दुर्गा चरणे

अन्ते जैसें रहे मन हमार ।

अनित्य असार ॥ धुन ॥

---

### (६९) झूमर (भदवारी)

॥ धुन ॥ समय के नदिया बही जाय, रे मन ले नहाय,

समय के नदिया बही जाय ॥

नाही ले पीले रे पानी, आगू लागी राखे आनी,

सुखलें नदी ने चले उपाय ।

रे मन ले नहाय ॥ धुन ॥

राखल पानी कर असनान, दोसरा के करें दान
जाय के बेरा संगे ले लगाय
रे मन ले नहाय ॥ धुन ॥
नहावे नहावे करी, जे बैठे आलसे भरी,
सेहो जे आखिरी पछताय
रे मन ! ले नहाय ॥ धुन ॥
भवप्रीता कहे हरि ! अन्तें जैसें युगल जोरी,
हृदय कमलें देखल जाय
रे मन ले नहाय...॥ धुन ॥

(१००) झूमर

दारूण बूढ़ापा देल देखा,
॥ धुन ॥ मन रे ! रूप रंगे पड़ी गेल फीका ॥
कार केश सफाकरि इशारां कहथीं हरि,
अबहूं दिल साफ करें बोका रे मन !
अबहूं दिल साफ करें बोका ॥ धुन ॥
अगिया जरे कें डरें, दता टूटी भागे दूरें,
मुंहा भेल बानर के जोखा रे मन !



मुंहा भेल बानर के जोखा ।
मन रे ! बात चीत भये गेल रूखा ॥ धुन ॥
सुन्दरी तरूणी होइ, बाबा कही लागे गोड़,
एक हूँ ने कहे प्राण सखा रे मन !
एक हूँ ने कहे प्राण सखा !
मन रे ! तयो नहीं मिटे प्रेम भूखा ॥ धुन ॥
भवप्रीता कहे हरि, आबी कें आखिरी बेरी,
राधा संगे चितें, दिहा देखा रे मन !
राधा संगे चितें दिहा देखा ।
प्रभु हो, रहे जैसे युगल रूप आंका ॥ धुन ॥

(१०१) झूमर (भादुरिया) सखो उक्ति

घरें ने सासु ससुर, ननदी देरा भैंसुर ·
गौरी ! वर बम भिखारी ।
एका भोला मशान बिहारी
॥ धुन ॥ हे गौरी ! वर बम भिखारी ॥
कैसें, करबै ससुरारी हे गौरी ?
वर बम भिखारी ॥

वर केने हीरा मोती, हाड़क माला चामक धोती

गौरी वर बम भिखारी ।

जटाक् नाग उठे फुफकारी हे गौरी !

वर बम भिखारी ॥ धुन ॥

वरें जे खाये जहर, भंगिया आठो पहर

गौरी वर बम भिखारी

नहीं चार दाल तरकारी हे गौरी

वर बम भिखारी ॥ धुन ॥

वर के भसम संग, मलिन होते सोनाक् अंग

गौरी वर बम भिखारी ।

भूताक् रंग देखी जाभे डरी हे गौरी !

वर बम भिखारी ॥ धुन ॥

भवप्रीता कहे माय, तोहीं अन्नपूर्णा जाय ।

गौरी वर बम भिखारी ।

कैलाशें उठाभे गड़ भारी हे गौरी ।

वर बम भिखारी ।

दुवारीं पर कुवेर भंडारी हे गौरी !

वर बम भिखारी ॥ धुन ॥



(१०२) झूमर (भादुरिया)

देख करमेर फेर, गज माथा गणेशेर

अति न्यारी दूती ! अति न्यारी ।

भीक्षा करेन विश्वनाथ त्रिपुरारी ॥

॥ धुन ॥ दूती अति न्यारी करमेर गति दूती अति न्यारी ।

महाबल राजानल, जार आज्ञा माने अग्नि जल,

अति न्यारी, दूती, अति न्यारी

सारथी होइला पाशाय राज्य हारी ॥ धुन ॥

करमेर गति दूती अति न्यारी

काल राजा होबेन राम, करम होइलो बाम

अति न्यारी दूती अति न्यारी ।

पितार वचने आज बन चारी ॥

करमेर गति दूती अति न्यारी ॥ धुन ॥

भवप्रीता कहे दूती ! आबाध करमेर गति

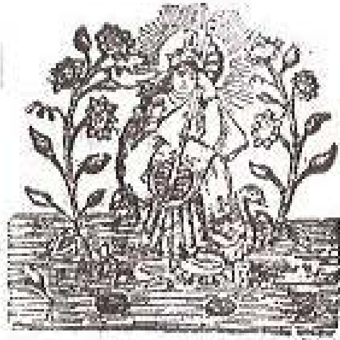
अति न्यारी ! दूती अति न्यारी ।

चक्राकार घुरे नाजाय निवारी

दूती अति न्यारी

करमेर गति दूती अति न्यारी ॥ धुन ॥

(१०३) झूमर (विद्या महिमा)



चाम के आँखी से देखा, पशु पन्ची समान लेखा
बिनू विद्या नर जन्म खाख
ढोल पिटल हाँक,
॥ धुन ॥ विद्या रतन आँखिके आँख ॥
ठके राज करमचारी, कार अच्छर भैसा सरीं
नहीं चिन्हे रसीद नम्बर दाग ॥ धुन ॥
ने जाने शास्त्र पुराण, ने बुझे भक्ति निर्वाण
बोली चाली बीचे पड़े फांक ॥ धुन ॥
भाई बहन युवा बूढ़ा मन दये सीख पढ़ा
जय हरि भवप्रीताकू डाक ॥ धुन ॥



# राष्ट्रीय झूमर

# राष्ट्रीय झूमर

## (१०८) झूमर (१५ अगस्त के प्रति)




॥ धुन ॥ तोरा में विदेशी रवि अस्त हे १५ अगस्त
तोरा में विदेशी रवि अस्त ।
ऋषि युग ग्रह चाँद, ईसवी सालक् प्रमाण,
वहे सालें पराधीन ध्वस्त हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥
गाँधी जी के तप पूर्ण; दासत्व निगड़ चूर्ण
स्वाधीन जे भारत समस्त, हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥
स्वतंत्र संग्राम रथि, विजयी नेता सुमति
विदेशी भागे में भेल व्यस्त हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥
पाइके नव स्वराज्य, पहरी विविध साज,
आनन्दे भारतवासी मस्त हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥
भवप्रीताक् निवेदन, धर्में राख नारायण
हरि के चरणे चित न्यस्त हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥



## (१०९) झूमर (चीनक चुनौती)

॥ धुन ॥ सीमा छोड़ि भाग दुरा चार, तेजे अहंकार
सीमा छोड़ि भाग दुराचार ॥
देख चीनियांक् भरी आँख
मरे घड़ी खोटाक पाँख ।
वीर भूमि भारत पर प्रहार ॥ धुन ॥
पहले कही भाय भाय, गोली मारे धाँय धाँय,
पापी के कपट व्यवहार ॥ धुन ॥
जानीं राखें चावन लाय, भारत में खाय भुंजाक लाय,
यहां दाल ने गले तोहार ॥ धुन ॥
भारतवासीं खाय चीनी, चीनिया बादाम किनी,
तहां चीनियांक् के करे केयार ॥ धुन ॥
नेहरू जी के ऐसन नीति, प्राय सभे देशस् प्रीति,
सभी मदद दिये में तैयार ॥ धुन ॥
धनी, गरीब नारी नर, सर्वस्व करि निछावर
राखते स्वाधीन अधिकार ॥ धुन ॥
भूमि देते धन, देते, लहु देते प्राण देते,
करे लागी दुश्मन के संहार ॥ धुन ॥
वहे भारत छिके रे राड़, जहां दधिचि देल देहक हाड़
भवप्रीताक् हरिनाम सार ॥ धुन ॥

(१०६) झूमर

निनायला के जैसन डाकू,

अचोकें आय भोंके चाकू।

तैसन चीनीया के व्यवहार रे,

भाय बनाय करै वैरा चार रे।

॥ धुन ॥ पापीक करें देश से बहार॥

मजबूत करें अपन सरकार रे ॥

इं चीनिया जों भारत पयतो,

धन इज्जत, धरम लेतो;

लम्पट मताल दुराचार रे।

दरिद्र नास्तिक जे खूंखार रे॥ धुन ॥

तन मन धन जन, करें सभी समर्पण।

राष्ट्र शक्ति, करेले विस्तार रे,

जहीम होयतो दुश्मन के संहार रे॥ धुन।

श्री नेहरू जी कर्णधार, बुद्धि नावें करतो पार।

भयान संकट पारावार रे।

भवप्रीताक ऐसन विचार रे॥ धुन॥

—— ० ——



# हास्य विनोद

भूमर

(भादुरिया)

दुर्जनं प्रथमं वन्दे .. — ..

(१०७) झूमर (भादुरिया)

लफन्दर माहात्म्य

॥ धुन ॥ भैया लफन्दर ! तोहें विनूं नंगर के वन्दर
(तोरा डरें कांपे पुरन्दर)

तों पानी में तैरावें पत्थर,
केरासिन् के कहे अत्तर ।
पंडित् के वनावे मोचन्दर ॥ धुन ॥

तों दिन के वतावे राति,
राति के जे दिनक् ख्याति ।
मृग (कस्तुरी मृग) के बनावे छुछुन्दर ॥ धुन ॥

मित्र मित्र में लड़ाय,
तोर अन्तर जुड़ाय,
निते फिनी करे जे कन्दर ॥ धुन ॥

तोरा जें करे विश्वास,
तेकर होवे सर्व नाश,
तोंहे फुसरी के बनावे भगन्दर ॥ धुन ॥

तोहीं राज् छेदी श्याम,
दादा के नाशले काम ।
भवप्रीताक् गति शिव सुन्दर ॥ धुन ॥



दोहा— ब्रह्म ज्ञान विनू नारि नर, करहीं न दूसरी बात ।
कौड़ी लागी लोभ वश करहि विप्र गुर घात ॥
(उत्तर काण्ड रामचरित्र मानस)

(१०८) झूमर (खेमटा) बंगला भाषा में

( मिष्टान्नेते इष्ट प्राप्ति ) कलियुग महिमा

छन्द— आधुनिक भाव धर्माधर्म कुसंस्कार ।
कलिते चार्व्वाक महा वाक्य मात्र सार ॥

झूमर

कलिते मानव गण, भोग लोभ परायण गो,
नाहि पूजा देवी देवतार ।
भेवे चिन्ते देवी देवा, लइते मानव सेवा,
साबारे लइला अवतार हे हे,
॥ धुन ॥ भवे भय नाहि आर —
ब्रह्म ज्ञाने भरिल संसार हे हे । भवे......
गजा माझे गजानन, सूंडटि करि गोपन गो,
कचूरीते कार्तिक कुमार ॥
चण्डी रस मूंडी, माझे, मंडाते चामुण्डा साजे,
काला जामें वास कालि मार हे हे ॥ धुन ॥

सरपुरीते पूर्ण शशि, बुंदे ते तारका राशि गो,
पांतुआय पद्मिनी प्राणाधार ।
संदेशे मां सरस्वती, लड्डु ते लक्ष्मी वसति,
परमान्ने परब्रह्म सार हे हे ॥ धुन ॥
मुलाब्रजाम्नने गोपाल, गुरचुपे गोपिनी पाल गो,
रसगोल्लाय रासेर बाहार ।
मोहनभोगे मदन राबड़ीते रति सदन,
बरफी ते बसन्त साकार हे हे ॥ धुन ॥
सिंगाराय सिंह बाहिनी, निमकी ते नाराद मुनि गो,
पापरेते पवन कुमार ।
पेड़ाते प्रेमावतार, क्षीरे विष्णु निद्रागार ।
बाताशाय बास विधातार हे हे ॥ धुन ॥
पुरी माझे जगन्नाथ, बालाई सुभद्रा साथ गो,
आलूदमे अश्विनि कुमार ।
पेये आचार कासुन्दी, ताहे बसेन मा कालिन्दी
शरबते सुरसरी धार हे हे ॥ धुन ॥
सीता भोगे सीताराम, राज भोगे राधाश्याम गो,
जेलेपिते जयन्त कुमार ।
भवप्रीता कहे सार, यम भय नाहीं आर,
नव युगे सब एकाकार हे हे ॥ धुन ।



(१०८) कुमर आलू चप वाला

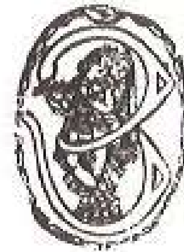
॥ धुन ॥ महिमा तोर के कहे अलप, हे आलू के चप !
महिमा तोर के कहे अलप ।
राखले देवघरक परमपत हे आलू के चप !
महिमा तोर के कहे अलप ॥
तेरह सौ तेहत्तर साल, आलू चप करे कमाल,
देवघरें सभिक मुहें तोरे, गप
हे आलू के चप ॥ धुन ॥
पावडर छालीदार दही, दुइ टाका सेर कम नहीं,
सवाद जैसन दवाय काया कल्प
हे आलू के चप ॥ धुन ॥
दोकानदार धन्वन्तरी चप अमृत तैयार करि,
सार्भे लोकक देथीं झपा झप
हे आलू के चप ॥ धुन ॥
पाकी सेना सीमा पार, तैसन लोक के कतार
चप लागी थाड़े करे तप
हे आलू के चप ॥ धुन ॥
भवप्रीतां कहे माय काली ! जेकर भोजन रबड़ी छाली
तेकर मुहें चप टपा टप टप
हे आलू के चप ॥ धुन॥

(११०) झूम्मर (आलू चप परिचय)

बाप तोहर आगिन बाबू, तेला महतारी
आलू के चप ।
हिंगनी बहिनी सुकुमारि हे आलू चप ॥
॥ धुन ॥ महिमा तोर के कहे अलप हे आलू के चप
लाल दुलहिन तोर मरचैया प्यारी
आलू के चप ।
बेटा तोहर मरीच मुरारी, हे आलू के चप ॥ धुन ॥
महिमा तोर के कहे अलप......
गरम मशाला शाला, जिरिया तोर सारी
हे आलू के चप !
बेशनी पीताम्बर धारी हे आलू चप ॥ धुन ॥
चूड़ा संगे जलपान तोहें, बड़ी मजेदारी
हे आलू के चप ।
भात रोटि संगे तरकारी हे आलू के चप ॥ धुन ॥
परिवार पोषण तोहं नाम यश धारी
हे आलू के चप ।
भवप्रीताक गति त्रिपुरारि हे आलू चप ॥ धुन ॥



(१११) झूम्मर (भादुरिया)



॥ धुन ॥ पूछे राधा प्यारी ?
विहुसी उत्तर देथीं बंशीधारी
(प्र०) राधा कौने चाहे भात गिल, कौने चाहे बिल ।
कौने चाहे, मिल श्याम ! कौने चाहे दिल
॥ धुन ॥
(उ०) कृष्ण— बूढ़े चाहे भात गिल, सॉपे चाहे बिल ।
बेपारीं चाहे मिल, प्रेमी चाहे दिल ॥ धुन ॥
(प्र०) राधा— केकर सरबस तील, केकर सरबस झील ?
केकर सरबस मन्दिल, केकर सरबस शील
॥ धुन ॥
(उ०) कृष्ण— पित्रीक् सरबस तील, माछाक सरबस झील,
भक्तक् सरबस मन्दिल, नारी सरबस शील
॥ धुन ॥
(प्र०) राधा— राधा कहे, कह बन्धु ! के जगें कुटिल ?
सबसें अधिक कहे केकरा जटिल ॥ धुन ॥
(उ०) कृष्ण— कृष्ण कहे तोर आँखी कटाच्छ कुटिल ।
*भवप्रीता* कहे वेदक अर्थ जे जटिल ।

# नेमान (नवान्न) वर्णन

## (११२) झूमर

।। धुन ।। अघन सोहान,
खसी चढ़ी आवला नेमान ।।
अघन सोहान ।।

दहीक् छाली धोती चदर,
गोर देहें चौक सुन्दर,
गुड़क् टोपर कल्गी गुच्छा धान ।। धुन ।।

तपोड़ा के ढाल धरी, मुरा के जे तरवारी
घंघरा के कुण्डल सोभे कान ।। धुन ।।

पाकल कैराक् माठी मल, चूड़ाक् हार झलमल,
गेन्दा माला गला शोभामान ।। धुन ।।

दौंड़ा सोभे गांथल बैंगन, कन्दा के खड़ाम् शोभन,
साकल माखल देहा झलकान ।। धुन ।।

साजी आयला नेमान देवा,
चूड़ैम जेकर वासी सेवा
भवप्रीता पूजे भगवान ।। धुन ।।



## (११३) झूमर

केवलय पाइते पंच ककार बर्जन

कुकर्म कुखाद्य काम कामिनी कांचन,
।। धुन ।। हरि हरि हरि, बोलो जय मधुसुदन ।।

कीर्त्तने कर्त्तन करे, पाश वैकर्तन
खकार चारिटि कबु ना होय आपन,
खर स्रोत स्विनी, खड्ग खेपा खल जन ।। धुन ।।

गति पावे कर पंच गकार सेवन
गुरू गोविन्द गंगा गीता गोपालन ।। धुन ।।

घकार त्रितय दूर यात्रा निवारण,
घट शून्य घड़ी शेश, घटा घोर घन ।। धुन ।।

भवप्रीता कहे ङ० कार त्रिभिषण
कुसंग भूजंग आर अनंग शासन ।। धुन ।।

(११८) ——— (भाउ[illegible]) निर्गुण (बंगला भाषा में)

॥ धुन ॥ आमार साराटि जीवन गेलो, भूतेर बेगारे।
कर्तिनारिनू किछु निजेर उद्धारे ॥
पाँचटि भूतेर बासा बासाय
आर छयटि सर्वनाशा।
पुराआरे निज देर आशा, खाटाय आमारे ॥ धुन ॥

केह मांगे अन्न जल सुखमय वासस्थल
ताप वातास-शीतल, सुख संचारे ॥ धुन ॥

केह कामिनी कांचन, नापेले करे गर्जन
केह मांगे भोग परीजन, अहंविकारे ॥ धुन ॥

सदा एदेर सेवा करि,
भवप्रीता ना पाय हरि।
एखन मांगे पद तरी
भव पाथारे ॥ धुन ॥

